— श्रीमद् राजचन्द्र विरचित —

आत्मसिद्धि शास्त्र

हिन्दी अनुवाद

142 देशों की 415 भाषाओं में अनुवाद

रचनाकार परम कृपालु देव
श्रीमद् राजचन्द्र

परम कृपालु देव श्रीमद् राजचन्द्र आत्मानुभवी सतपुरुष, आध्यात्मिक विद्वान एवं महान कवि थे। उनका बचपन का नाम रायचंदभाई रवजीभाई मेहता था। वे शुद्धात्मा के उपदेशक एवं भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी के आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रुप में जाने जाते हैं। उनका जन्म 9 नवम्बर, 1867 के दिन ववाणिया बंदर (गुजरात-भारत) में हुआ था।

उन्होंने 10 साल की उम्र में ही जनसमुदाय में उपदेश देना एवं 11 साल की उम्र में लेख लिखना प्रारम्भ किया था। इतना ही नहीं, मुम्बई में 20 साल की उम्र में शतावधान (एक ही समय में 100 अलग-अलग बातें याद रखने का अद्‌भूत स्मृति परीक्षण) के प्रयोग भी प्रस्तुत किये थे। 20 साल की उम्र में जनकबाई के साथ उनका विवाह हुआ, तत्पश्चात् वे मोती और हीरे के कारोबार में संलग्न हुये।

इसके अतिरिक्त, अपने पूरे जीवन में उन्होंने आत्मसिद्धि शास्त्र एवं अपूर्व अवसर काव्य सहित करीब 800 खत लिखकर आध्यात्मिक यात्रा की। सात वर्ष की आयु में उन्हें पिछले कुछ भवों का जातिस्मरण ज्ञान हुआ था, जिसका उल्लेख उन्होंने अपने खतों में किया है। 1890 में लिखे गये खत में उन्होंने स्वयं को प्रकट होने वाली आत्मानुभूति का भी उल्लेख किया है।

कवि की सफलता का तथ्य यह है कि उन्होंने अध्यात्म जगत में अनेक लोगों में उत्साह जगाया था। पाठक आध्यात्मिकता की ओर गति करें, इस हेतु से उन्होंने आध्यात्मिकता के सम्बन्ध में यथायोग्य स्पष्टीकरण किया था।

32 साल की उम्र में उन्हें ऐसी बीमारी लगी कि जिससे वे स्वस्थ नहीं हो सके। 9 अप्रैल, 1901 के दिन 33 साल की उम्र में उन्होंने राजकोट (गुजरात) में पार्थिव देहत्याग किया। उनके जीवन के काल में वे अनेकानेक लोगों के लिये आत्मानुभवी गुरु रहे।

ॐ

आत्मसिद्धि

परम कृपालु देव श्रीमद् राजचन्द्र विरचित

आत्मसिद्धि शास्त्र

[हिन्दी अनुवाद]

संक्षिप्त टीका : फूलचन्द

प्रकाशक : श्री आत्मसिद्धि शास्त्र मिशन
आध्यत्मिक साधना केन्द्र-उमराला

प्रथम संस्करण : 15 अगस्त 2015

प्राप्ति स्थान :

आध्यात्मिक साधना केन्द्र-प्रधान केन्द्र
पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामी प्रवचन हॉल,
चोगठ रोड, उमराला, जि. भावनगर (गुजरात)
किशोरभाई जैन : +91-2843-235202/03
धर्मेन्द्रभाई जैन : +91-9898245201
Website : www.fulchandshastri.com
E-mail : ask@fulchandshastri.com

आध्यात्मिक साधना केन्द्र-मुंबई केन्द्र
द व्हाईट गोल्ड, 72/74 कंसारा चाल,
पायधुनी के पास, मुंबई - 400 002.
धनराजभाई हुंडिया : +91-9460058839
मांगीलालभाई चंदन : +91-9223278899

आध्यात्मिक साधना केन्द्र-अहमदाबाद केन्द्र
न.10 संतकृपा सोसायटी, पवन सोसायटी के पास,
बलदेवनगर के सामने, 132 फीट रिंग रोड,
जीवराज पार्क, अहमदाबाद - 51.
कोकीलाबेन गीरीशभाई रत्नोत्तर : +91-9913072548

मुद्रक : मल्टी ग्राफिक्स, मुम्बई
फोन : +91-22-23884222 / +91-9987999299
Website : www.multygraphics.com
www.shrutgyan.com

चैतन्य स्वरूपी निज शुद्धात्मा के आश्रय से

निर्विकल्प आत्मानुभूति को उपलब्ध

समस्त सम्यग्द्रष्टी

ज्ञानी धर्मात्माओं को

सविनय समर्पित

प्रस्तावना

चैतन्य स्वरुपी निज शुद्धात्मा के आश्रय से निर्विकल्प आत्मानुभव को उपलब्ध महापुरुष परम कृपालु देव श्रीमद् राजचन्द्रजी द्वारा विरचित श्री आत्मसिद्धि शास्त्र एक महान परमागम है और समस्त तीर्थंकर परमात्माओं की दिव्यध्वनि का सार है। जगत में होने वाले परम पवित्र आध्यात्मिक सत्पुरुषों में श्रीमद् राजचन्द्रजी प्रमुख हैं। उनकी अंतरंग दशा ऐसी निर्मल थी कि वे भौतिक समृद्धि, धन, पद, प्रतिष्ठा, यहाँ तक कि अपने शरीर के प्रति भी मोहमुक्त होकर अलिप्त रहते थे।

भारत देश की वर्तमान अधिकांश मुद्राओं पर भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी का चित्र होता है। वे सारे विश्व में अहिंसा के दूत के रुप में आदर के साथ जाने जाते हैं। ऐसे महात्मा गांधीजी भी श्रीमद् राजचन्द्रजी द्वारा प्राप्त शिक्षा के प्रति अत्यधिक ऋणी थे। नये भारत के निर्माण में श्रीमद् राजचन्द्रजी की आध्यात्मिक शिक्षा अत्यंत उपयोगी हो सकती है।

महात्मा गांधीजी के शब्दों में : ''कवि (श्रीमद् राजचन्द्रजी) के अलावा रस्किन एवं टॉलस्टॉय ने मेरे आंतरिक चारित्र के निर्माण में योगदान दिया है, लेकिन कवि का मुझ पर विशेष गहरा प्रभाव पडा है, क्योंकि मैं उनके साथ व्यक्तिगत एवं घनिष्ठ संपर्क में आया था।''

आध्यात्मिक युगपुरुष पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामी के शब्दों में : ''श्रीमद् राजचन्द्र हुये, 33 साल की उम्र में देह छूट गया, परन्तु वे एकावतारी हो गये हैं। मुम्बई में लाखों का जवाहिरात का कारोबार था, फिर भी अंदर से भिन्न हो गये थे। नारियल का गोला जैसे अंदर से अलग हो जाये, ऐसे सम्यग्द्रष्टी को आत्मा राग और देह से अलग हो जाता है। अल्प जीवन काल में भी उन्होंने आत्मानुभव प्रमाण से अध्यात्म क्षेत्र में अद्भूत योगदान दिया है।''

गुजराती भाषा एवं पद्यशैली में रचित आत्मसिद्धि शास्त्र अमूल्य परम पवित्र ग्रंथ है, जो आत्मविज्ञान पर आधारित है। इस ग्रंथ में अनेकांत द्रष्टि से आत्मा का स्वरुप स्पष्ट किया है और छह पदों के माध्यम से आध्यात्मिकता के सम्बन्ध में गहराई से चिंतन एवं विवेचन किया है।

1. आत्मा है।
2. आत्मा नित्य है।
3. आत्मा अपने कर्मो का कर्त्ता है।
4. आत्मा अपने कर्मो का भोक्ता है।
5. आत्मा का मोक्ष है।
6. आत्मा के मोक्ष का उपाय है।

आत्मसिद्धि शास्त्र की 142 गाथाओं में से, प्रथम 42 गाथाओं में प्रत्यक्ष सद्गुरु, मतार्थी एवं आत्मार्थी जीव के लक्षणों पर विवेचन किया हैं। अन्य 100 गाथाओं में प्रश्न एवं उत्तर की शैली में शिष्य की शंका का समाधान किया है, जिनमें छह पदों का विस्तृत विवेचन भी विचारणीय है।

शिष्य को आत्मसिद्धि शास्त्र समझने में सरलता हो, इसलिये श्रीमद् राजचन्द्रजी ने शिष्य एवं गुरु के संवाद का उपयोग किया है। जिनागम का ऐसा कोई वाक्य नहीं है, जिसका भाव आत्मसिद्धि शास्त्र में समाहित न हुआ हो।

21000 वर्षों का पंचम काल होता है। अब तक करीब 2500 वर्ष समाप्त हुये है। पंचम काल के अंत तक 18500 सालों के लिये इस पवित्र शास्त्र का अस्तित्व रहेगा एवं अनेकानेक साधकों की साधना का आधार बनेगा। इस हेतु से मैं समस्त पाठकों से नम्र निवेदन करता हूँ कि इस शास्त्र का भविष्य में आपके समय में बोली एवं समझी जाने वाली समस्त भाषाओं में अनुवाद करें या करवायें और पूरी सृष्टि में इसका प्रचार-प्रसार करके आगे बढायें। यदि भविष्य में प्रलय के कारण विश्व में विनाश हो और इस शास्त्र की एक प्रत भी बच जाये, तो एक प्रत में से लाखों-करोडों प्रत छपाकर पूरे विश्व में पुनः आत्मा की गुँज फैल सकती है।

इस शास्त्र की 142 गाथाओं का विश्व के 142 देशों की करीब 415 भाषाओं में अनुवाद हो, यही आत्मसिद्धि शास्त्र मिशन का वर्तमान उद्देश्य है।

परम कृपालु देव श्रीमद् राजचन्द्रजी द्वारा मुझे संदेश एवं प्रेरणा मिली है कि आत्मसिद्धि शास्त्र के माध्यम से पूरी सृष्टि में सत्य धर्म का फैलाव हो। श्रीमद् राजचन्द्रजी के 150 वें जन्मदिन के अवसर पर, 4 नवम्बर, 2017 के दिन यह मिशन निर्विध्नरुप से सम्पन्न हो चुका होगा।

आत्मसिद्धि शास्त्र मिशन के विकास हेतु आप अपना अभिप्राय या सुझाव, ई-मेल या खत द्वारा अवश्य भेजें। ■

फूलचन्द

www.fulchandshastri.com *mission@fulchandshastri.com*

गाथा १

જે સ્વરૂપ સમજ્યા વિના, પામ્યો દુઃખ અનંત,
સમજાવ્યું તે પદ નમું - શ્રી સદ્‌ગુરુ ભગવંત. ૧

जे स्वरुप समज्या विना, पाम्यो दुःख अनंत;
समजाव्युं ते पद नमुं, श्री सद्‌गुरु भगवंत ।१।

चैतन्य स्वभावी निज शुद्धात्मा का स्वरुप समझे बिना आत्मा ने अनंत दुःख भोगा है। जिन्होंने आत्मा का स्वरुप समझाया, उन श्री सद्‌गुरु भगवान को मैं नमस्कार करता हूँ।

गाथा २

વર્ત્તમાન આ કાળમાં, મોક્ષમાર્ગ બહુ લોપ,
વિચારવા આત્માર્થીને, ભાખ્યો અત્ર અગોપ્ય. ૨

वर्तमान आ कालमां मोक्षमार्ग बहु लोप;
विचारवा आत्मार्थीने, भाख्यो अत्र अगोप्य ।२।

इस वर्तमान कलियुग में मोक्षमार्ग का यथार्थ निरुपण प्रायः लुप्त हो गया है। इसलिये आत्मार्थी को विचार करने हेतु यहाँ मोक्षमार्ग को प्रगट कहा गया है।

गाथा ३

કોઈ ક્રિયા-જડ થઈ રહ્યા, શુષ્કજ્ઞાનમાં કોઈ,
માને મારગ મોક્ષનો, કરુણા ઉપજે જોઈ ૩

कोई क्रियाजड थई रह्या, शुष्कज्ञानमां कोई;
माने मारग मोक्षनो, करुणा उपजे जोई ।३।

कुछ लोग शरीर की जडक्रिया में और कुछ लोग शास्त्रीय शुष्कज्ञान में अटक रहे हैं। वे उन्हें मोक्षमार्ग मानते हैं, यह देखकर श्री सद्गुरु को उनके प्रति करुणा उत्पन्न होती है।

गाथा ४

બાહ્ય ક્રિયામાં રાચતા, અંતર ભેદ ન કાંઈ,
જ્ઞાનમાર્ગ નીષેધતા, તેહ ક્રિયાજડ આઈ ૪

बाह्य क्रियामां राचता, अंतर भेद न काई;
ज्ञानमार्ग नीषेधता, तेह क्रियाजड आई ।४।

आत्मा और शरीर के बीच भेदज्ञान के बिना क्रियाजड़ जीव बाह्यक्रिया में संतुष्ट हो रहे हैं। साथ ही, वे आत्मा के ज्ञानमार्ग का निषेध करते हैं।

गाथा ५

બંધ મોક્ષ છે કલ્પના, ભાખે વાણી માંહિ,
વર્તે મોહાવેશમાં, શુષ્ક જ્ઞાની તે આહિં. ૫

बंध मोक्ष छे कल्पना, भाखे वाणी मांहिं;
वर्ते मोहावेशमां, शुष्क ज्ञानी ते आहिं ।५।

जो लोग बंध और मोक्ष कल्पना है, ऐसा वाणी में बोलते हैं और मोहावेश में प्रवर्तते हैं, वे शुष्कज्ञानी हैं।

गाथा ६

વૈરાગ્યાદિ સફળ તો, જો સહ આતમજ્ઞાન;
તેમજ આતમજ્ઞાનની, પ્રાપ્તિતણાં નિદાન. ૬

वैराग्यादि सफल तो, जो सह आतमज्ञान;
तेमज आतमज्ञाननी प्राप्तितणां निदान ।६।

यदि वैराग्यादि आत्मज्ञान सहित हो तो सफल है एवं वैराग्यादि चैतन्य स्वभावी शुद्धात्मा के लक्ष्य से होते हो तो आत्मज्ञान की प्राप्ति के कारण है।

गाथा ७

ત્યાગ વિરાગ ન ચિત્તમાં, થાય ન તેને જ્ઞાન,
અટકે ત્યાગ વિરાગમાં, તો ભૂલે નિજ ભાન. ૭

त्याग विराग न चित्तमां, थाय न तेने ज्ञान;
अटके त्याग विरागमां, तो भूले निज भान ।७।

जिनके विचारों में त्याग और वैराग्य नहीं होता, उन्हें आत्मज्ञान नहीं होता। जो त्याग और वैराग्य के विचारों में अटक जाते हैं, वे भी निज शुद्धात्मा के स्वरुप को नहीं पहिचानते।

गाथा ८

જ્યાં જ્યાં જે જે યોગ્ય છે, તહાં સમજવું તેહ;
ત્યાં ત્યાં તે તે આચરે, આત્માર્થી જન એહ. ૮

ज्यां ज्यां जे जे योग्य छे, तहां समजवुं तेह;
त्यां त्यां ते ते आचरे, आत्मार्थी जन एह ।८।

जो जीव, जहाँ जिस अपेक्षा से कथन किया हो, वहाँ उस अपेक्षा से यथायोग्य अर्थ ग्रहण करता है और यथायोग्य आचरण का पालन करता है, वह जीव आत्मार्थी हैं।

गाथा ९

સેવે સદ્ગુરુ ચરણને, ત્યાગી દઈ નિજપક્ષ,
પામે તે પરમાર્થને, નિજપદનો લે લક્ષ. ૯

सेवे सद्गुरु चरणने, त्यागी दई निजपक्ष;
पामे ते परमार्थने, निजपदनो ले लक्ष ।९।

जो जीव अपने पक्ष को छोडकर सद्गुरु के चरण में समर्पित होता है, वह जीव निज शुद्धात्मा के आश्रय से परमपद को पाता हैं।

गाथा १०

આત્મજ્ઞાન સમદર્શિતા, વિચરે ઉદયપ્રયોગ,
અપૂર્વ વાણી પરમશ્રુત, સદ્ગુરુ લક્ષણ યોગ. ૧૦

आत्मज्ञान समदर्शिता, विचरे उदयप्रयोग;
अपूर्व वाणी परमश्रुत, सद्गुरु लक्षण योग्य ।१०।

आत्मज्ञान, वीतरागता, पूर्व कर्म के उदय अनुसार विचरण, अपूर्ववाणी और परम श्रुतज्ञान, ये आत्मानुभवी सद्गुरु के लक्षण हैं।

गाथा ११

પ્રત્યક્ષ સદ્‌ગુરુ સમ નહીં, પરોક્ષ જિન ઉપકાર;
એવો લક્ષ થયા વિના, ઉગે ન આત્મવિચાર. ૧૧

प्रत्यक्ष सद्‌गुरु सम नहीं, परोक्ष जिन उपकार;
एवो लक्ष्य थया विना, उगे न आत्मविचार ।११।

परोक्ष जिनेन्द्र भगवान का उपकार भी प्रत्यक्ष सद्‌गुरु के समान नहीं होता है। ऐसा महिमाभाव जागृत हुये बिना शुद्धात्मा के विचार उदित नहीं होते।

गाथा १२

સદ્‌ગુરુના ઉપદેશ વણ, સમજાય ન જિનરૂપ;
સમજ્યા વણ ઉપકાર શો સમજ્યે જિનસ્વરૂપ. ૧૨

सद्‌गुरुना उपदेश वण, समजाय न जिनरूप;
समज्या वण उपकार शो समज्ये जिनस्वरूप ।१२।

सद्‌गुरु के उपदेश के बिना जिनेन्द्र भगवान का स्वरुप समझ में नहीं आता। समझे बिना क्या उपकार होगा? जो जीव जिनेन्द्र भगवान का स्वरुप समझता है, वह जीव जिनेन्द्र भगवान स्वरुप हो जाता है।

गाथा १३

આત્માદી અસ્તિત્વનાં, જેહ નિરૂપક શાસ્ત્ર;
પ્રત્યક્ષ સદ્‌ગુરુ યોગ નહિં, ત્યાં આધાર સુપાત્ર ।૧૩।

आत्मादी अस्तित्वनां, जेह निरुपक शास्त्र;
प्रत्यक्ष सद्‌गुरु योग नहिं, त्यां आधार सुपात्र ।१३।

जहाँ सुपात्र जीव को प्रत्यक्ष सद्‌गुरु का सानिध्य प्राप्त न हो, वहाँ आत्मादि अस्तित्व के निरुपक शास्त्र आधारभूत हैं।

गाथा १४

અથવા સદ્‌ગુરુ એ કહ્યા, જે અવગાહન કાજ;
તે તે નિત્ય વિચારવા, કરી મતાંતર ત્યાજ ।૧૪।

अथवा सद्‌गुरु ए कह्या, जे अवगाहन काज;
ते ते नित्य विचारवा, करी मतांतर त्याज ।१४।

अथवा सद्‌गुरु की आज्ञा अनुसार स्वयं के लिये आधारभूत शास्त्रों का अपने मत का आग्रह छोडकर नित्य विचार करना चाहिए।

गाथा १५

રોકે જીવ સ્વચ્છંદને, પામે અવશ્ય મોક્ષ,
પામ્યા એમ અનંત છે, ભાખ્યું જિન નિર્દોષ. ૧૫

रोके जीव स्वच्छंद तो, पामे अवश्य मोक्ष;
पाम्या एम अनंत छे, भाख्युं जिन निर्दोष ।१५।

वीतरागी जिनेन्द्र भगवान ने कहा हैं कि यदि जीव अपना स्वच्छंद छोड दे, तो अवश्य मोक्ष प्राप्त होगा। अनन्त जीवों ने इसी विधि से मोक्ष पाया है।

गाथा १६

પ્રત્યક્ષ સદ્‌ગુરુ યોગથી, સ્વચ્છંદ તે રોકાય,
અન્ય ઉપાયે કર્યા થકી, પ્રાયે બમણો થાય. ૧૬

प्रत्यक्ष सद्‌गुरु योगथी, स्वच्छंद ते रोकाय;
अन्य उपाय कर्या थकी, प्रायें बमणो थाय ।१६।

प्रत्यक्ष सद्‌गुरु का सानिध्य प्राप्त होने पर स्वच्छंद मिटता हैं। अन्य उपाय खोजने पर स्वच्छंद दुगना होता है।

गाथा १७

સ્વચ્છંદ, મત આગ્રહ તજી, વર્તે સદ્‌ગુરુ લક્ષ,
સમકિત તેને ભાખિયું, કારણ ગણી પ્રત્યક્ષ. ૧૭

स्वच्छंद मत आग्रह तजी, वर्ते सद्‌गुरु लक्ष;
समकित तेने भाखियुं, कारण गणी प्रत्यक्ष ।१७।

जो जीव अपनी स्वच्छंदता, मत और आग्रह को छोडकर सद्‌गुरु का अनुसरण करता है, उस जीव को प्रत्यक्ष सद्‌गुरु को कारण मानकर समकित कहा है।

गाथा १८

માનાદિક શત્રુ મહા, નિજ છંદે ન મરાય,
જાતાં સદ્‌ગુરુ શરણમાં, અલ્પ પ્રયાસે જાય. ૧૮

मानादिक शत्रु महा, निज छंदे न मराय;
जातां सद्‌गुरु शरणमां, अल्प प्रयासे जाय ।१८।

मान आदि कषाय आत्मा के महाशत्रु है। अपनी आग्रहयुक्त बुद्धि से उनका नाश नहीं होता है। वे कषायभाव सद्‌गुरु की शरण में जाने पर अल्प प्रयास से ही नष्ट होते हैं।

गाथा १९

જે સદ્ગુરુ ઉપદેશથી, પામ્યો કેવળજ્ઞાન,
ગુરુ રહ્યા છદ્મસ્થ પણ, વિનય કરે ભગવાન. ૧૯

जे सद्गुरु उपदेश थी, पाम्यो केवळज्ञान;
गुरु रह्या छद्मस्थ पण, विनय करे भगवान ।१९।

जिन सद्गुरु के उपदेश से शिष्य को केवलज्ञान हुआ हो, वे सद्गुरु अभी छद्मस्थ अवस्था में हो, तो भी केवली भगवान केवलज्ञान की पर्याय में जानने रुप विनय करते हैं। निज शुद्धात्मा के उपदेशक सद्गुरु पर भी द्रष्टि न करके निज शुद्धात्मा में लीन होना ही सद्गुरु का वास्तविक विनय है।

गाथा २०

એવો માર્ગ વિનયતણો, ભાખ્યો શ્રી વીતરાગ,
મૂળ હેતુ એ માર્ગનો, સમજે કોઈ સુભાગ્ય. ૨૦

एवो मार्ग विनयतणो, भाख्यो श्री वीतराग;
मूळ हेतु ए मार्गनो, समजे कोई सुभाग्य ।२०।

श्री वीतरागी भगवान ने ऐसा जो विनय का मार्ग कहा है, उस मार्ग के मूल आशय को कुछ ही सौभाग्यशाली जीव समझते हैं।

गाथा २१

અસદ્ગુરુ એ વિનયનો, લાભ લહે જો કાંઈ;
મહામોહિની કર્મથી, બુડે ભવજળમાંહિ. ૨૧

असद्गुरु ए विनयनो लाभ लहे जो कांई;
महामोहिनी कर्मथी, बुडे भवजळमांहि ।२१।

यदि असद्गुरु उस विनय का दुरुपयोग करे, तो महामोहनीय कर्म के फल में भवसागर में डूबता है।

गाथा २२

હોય મુમુક્ષુ જીવ તે, સમજે એહ વિચાર;
હોય મતાર્થિ જીવ તે, અવળો લે નિર્ધાર. ૨૨

होय मुमुक्षु जीव ते, समजे एह विचार;
होय मतार्थि जीव ते, अवळो ले निर्धार ।२२।

जिसे मोक्ष पाने की इच्छा हो, ऐसा मुमुक्षु जीव सद्गुरु के यथार्थ आशय को ग्रहण करता है। परन्तु अपने मत का आग्रही ऐसा मतार्थी जीव विपरीत अर्थ ग्रहण करता है।

गाथा २३

હોય મતાર્થી તેહને, થાય ન આતમલક્ષ
તેહ મતાર્થી લક્ષણો, અહીં કહ્યા નિર્પક્ષ. ૨૩

होय मतार्थि तेहने, थाय न आतमलक्ष;
तेह मतार्थि लक्षणो, अहीं कह्या निर्पक्ष ।२३।

मतार्थी जीव को आत्मज्ञान नहीं होता है। यहाँ किसी भी प्रकार के पक्षपात के बिना मतार्थी जीव के लक्षण कहे हैं।

मतार्थि लक्षण (गाथा २४-३३)

गाथा २४

બાહ્ય ત્યાગ પણ જ્ઞાન નહિ, તે માને ગુરુ સત્ય
અથવા નિજકુળધર્મના, તે ગુરુમાં જ મમત્વ. ૨૪

बाह्य त्याग पण ज्ञान नही, ते माने गुरु सत्य;
अथवा निजकुळधर्मना, ते गुरुमां ज ममत्व ।२४।

मतार्थी जीव उस गुरु को सत्य मानता है, जिसे बाह्य त्याग होता है, परन्तु आत्मज्ञान नहीं। मतार्थी कुलपरंपरा से माने जाने वाले गुरु को ही अपना गुरु मानता है।

गाथा २५

જે જિનદેહ પ્રમાણને, સમવસરણાદિ સિદ્ધિ;
વર્ણન સમજે જિનનું, રોકિ રહે નિજબુદ્ધિ. ૨૫

जे जिनदेहप्रमाण ने, समवसरणादि सिद्धि;
वर्णन समजे जिननुं, रोकि रहे निजबुद्धि ।२५।

वह जिनेन्द्र भगवान के शरीर और समवसरण आदि बाह्य वैभव के वर्णन को जिनेन्द्र भगवान का स्वरुप समझता है, वह बाह्य संयोगो के विचारों में अटक जाता है।

गाथा २६

પ્રત્યક્ષ સદ્‌ગુરુ યોગમાં, વર્ત્તે દૃષ્ટિ વિમુખ
અસદ્‌ગુરુને દૃઢ કરે, નિજ માનાર્થે મુખ્ય ૨૬

प्रत्यक्ष सद्‌गुरु योगमां, वर्त्ते द्रष्टि विमुख;
असद्‌गुरुने द्रढ करे, निज मानार्थे मुख्य ।२६।

प्रत्यक्ष सद्‌गुरु के सानिध्य में भी उसकी द्रष्टि विपरीत दिशा में घूमती है। मुख्य रुप से वह अपने मान के कारण असद्‌गुरु का ही पोषण करता है।

गाथा २७

દેવાદિ ગતિ ભંગમાં, જે સમજે શ્રુતજ્ઞાન,
માને નિજમત વેષનો, આગ્રહ મુક્તિ નિદાન. ૨૭

देवादी गति भंगमां, जे समजे श्रुतज्ञान;
माने निजमत वेषनो, आग्रह मुक्ति निदान ।२७।

वह देह आदि गतियों के भेद के ज्ञान को श्रुतज्ञान समझता है और अपने मत में पहने जाने वाले वेष का आग्रह रखकर उस वेष को मोक्ष का कारण मानता है।

गाथा २८

લહ્યું સ્વરૂપ ન વૃત્તિનું, ગ્રહ્યું વ્રત અભિમાન,
ગ્રહે નહીં પરમાર્થને, લેવા લૌકિક માન. ૨૮

लह्युं स्वरुप न वृत्तिनुं, ग्रह्युं व्रत अभिमान;
ग्रहे नहीं परमार्थने, लेवा लौकिक मान ।२८।

वह आत्मा में स्थित मलिन वृत्ति का स्वरुप पहिचाने बिना व्रत पालन करने का नियम लेता है और उसका भी अहंकार करता है। वह लौकिक पद पाने हेतु परमपद को नहीं पाता है।

गाथा २९

અથવા નિશ્ચય નય ગ્રહે, માત્ર શબ્દની માંય,
લોપે સદ્‌વ્યવહારને, સાધન રહીત થાય. ૨૯

अथवा निश्चय नय ग्रहे, मात्र शब्दनी मांय;
लोपे सद्‌व्यवहारने, साधन रहीत थाय ।२९।

अथवा वह निश्चयनय के कथन को शब्द मात्र से ग्रहण करता है, वह सदाचार का निषेध करके साधन रहित होता है।

गाथा ३०

જ્ઞાનદશા પામે નહીં, સાધન દશા ન કાંઈ,
પામે તેનો સંગ જે, તે બુડે ભવમાંહિ. ૩૦

ज्ञानदशा पामे नहीं, साधन दशा न कांई;
पामे तेनो संग जे, ते बुडे भवमांहि ।३०।

वह जीव आत्मज्ञान तो नहीं पाता, परन्तु आत्मज्ञान के आधारभूत साधनो का अवलंबन भी नहीं लेता। ऐसे जीवों के साथी भी भवसागर में डूबते हैं।

गाथा ३१

એ પણ જીવ મતાર્થમાં, નિજમાનાદી કાજ;
પામે નહિ પરમાર્થને, અન અધિકારીમાજ. ૩૧

ए पण जीव मतार्थमां, निजमानादी काज;
पामे नहीं परमार्थने, अन अधिकारीमाज ।३१।

वह जीव भी अपने मान के कारण मत के आग्रह में रहकर परमपद को नहीं पाता और उस पद की प्राप्ति के लिये वह अपात्र ही रहता है।

गाथा ३२

નહિ કષાય ઉપશાંતતા, નહિ અંતર વૈરાગ્ય;
સરળપણું ન મધ્યસ્થતા, એ મતાર્થિ દુર્ભાગ્ય. ૩૨

नहिं कषाय उपशांतता, नहिं अंतर वैराग्य;
सरळपणुं न मध्यस्थता, ए मतार्थि दुर्भाग्य ।३२।

मतार्थी जीव का यह दुर्भाग्य है कि उसमें कषाय की उपशांतता, अंतरंग में वैराग्य, सरलता और मध्यस्थ भाव नहीं होते हैं।

गाथा ३३

લક્ષણ કહ્યાં મતાર્થીના, મતાર્થ જાવા કાજ,
હવે કહું આત્માર્થીના, આત્મઅર્થ સુખસાજ. ૩૩

लक्षण कह्यां मतार्थिना, मतार्थ जावा काज;
हवे कहुं आत्मार्थिना, आत्मअर्थ सुखसाज ।३३।

मतार्थी जीव का मतार्थ दूर हो, इस हेतु से मतार्थी के लक्षण कहे हैं। अब, आत्मानुभूति और आत्मिक सुख की प्राप्ति के हेतु से आत्मार्थी के लक्षण कहता हूँ।

आत्मार्थि लक्षण (गाथा ३४-४२)

गाथा ३४

આત્મજ્ઞાન ત્યાં મુનિપણું, તે સાચા ગુરુ હોય;
બાકી કુળ ગુરુ કલ્પના, આત્માર્થી નહિ જોય. ૩૪

आत्म ज्ञान त्यां मुनिपणुं, ते साचा गुरु होय;
बाकी कुळ गुरु कल्पना, आत्मार्थि नहि जोय ।३४।

जहाँ आत्मानुभूति पूर्वक आत्मज्ञान प्रगट हुआ हो, वहाँ मुनिपना होता है, वे मुनि सच्चे गुरु होते हैं। अन्य सर्व कुल परंपरा से माने जाते काल्पनिक मिथ्यागुरु हैं, उन्हें आत्मार्थी गुरु के रुप में नहीं मानता।

गाथा ३५

પ્રત્યક્ષ સદ્ગુરુ પ્રાપ્તિનો, ગણે પરમ ઉપકાર,
ત્રણે યોગ એકત્વથી, વર્તે આજ્ઞા ધાર. ૩૫

प्रत्यक्ष सद्गुरु प्राप्तिनो, गणे परम उपकार;
त्रणे योग एकत्वथी, वर्त्ते आज्ञा धार ।३५।

आत्मार्थी प्रत्यक्ष सद्गुरु का सानिध्य प्राप्त होने को परम उपकार मानता है। मन, वचन और काया ऐसे तीन योगों की एकता से सद्गुरु की आज्ञा का पालन करता है।

गाथा ३६

એક હોય ત્રણ કાળમાં, પરમારથનો પંથ,
પ્રેરે તે પરમાર્થને, તે વ્યવહાર સમંત. ૩૬

एक होय त्रण काळमां, परमारथनो पंथ;
प्रेरे ते परमार्थने, ते व्यवहार समंत ।३६।

परमपद की प्राप्ति का मार्ग भूत, वर्तमान और भविष्य इसप्रकार तीनों कालों में एक ही होता है। वह व्यवहार ही व्यवहार है, जो परमपद की प्राप्ति की प्रेरणा देने वाला हो।

गाथा ३७

એમ વિચારી અંતરે, શોધે સદ્ગુરુ યોગ;
કામ એક આત્માર્થનું, બીજો નહિ મનરોગ. ૩૭

एम विचारी अंतरे, शोधे सद्गुरु योग;
काम एक आत्मार्थनुं, बीजो नहिं मनरोग ।३७।

इसप्रकार अंतरंग विचार सहित आत्मार्थी जीव सद्गुरु का सानिध्य खोजता है। उसे एक मात्र आत्मा ही प्रयोजनभूत है और मन में दूसरी कोई अभिलाषा नहीं है।

गाथा ३८

કષાયની ઉપશાંતતા, માત્ર મોક્ષ અભિલાષ;
ભવે ખેદ પ્રાણીદયા, ત્યાં આત્માર્થ નિવાસ. ૩૮

कषायनी उपशांतता, मात्र मोक्ष अभिलाष;
भवे खेद प्राणीदया, त्यां आत्मार्थ निवास ।३८।

जहाँ कषाय की उपशांतता हो, मात्र मोक्ष की अभिलाषा हो, भवभ्रमण का खेद होता हो और प्राणी मात्र के प्रति दया का भाव हो, वहाँ आत्मार्थ बसता है।

गाथा ३९

દશા ન એવી જ્યાં સુધી, જીવ લહે નહિ જોગ;
મોક્ષમાર્ગ પામે નહીં, મટે ન અંતર રોગ. ૩૯

दशा न एवी ज्यां सुधी, जीव लहे नहि जोग;
मोक्षमार्ग पामे नहीं, मटे न अंतर रोग ।३९।

जब तक जीव में ऐसी दशा प्रकट नहीं होती है, तब तक जीव मोक्षमार्ग को नहीं पाता है और उसका आत्मभ्रांतिरुप रोग दूर नहीं होता है।

गाथा ४०

આવે જ્યાં એવી દશા, સદ્‌ગુરુબોધ સુહાય;
તે બોધે સુવિચારણા, ત્યાં પ્રગટે સુખદાય. ૪૦

आवे ज्यां एवी दशा, सद्‌गुरुबोध सुहाय;
ते बोधे सुविचारणा, त्यां प्रगटे सुखदाय ।४०।

जब जीव में ऐसी दशा प्रकट होती है, तब उसे सद्‌गुरु का बोध रुचिकर लगता है। उस बोध के माध्यम से सम्यक् विचारणा प्रकट होती है और सुख भी उसे प्रकट होता है।

गाथा ४१

જ્યાં પ્રગટે સુવિચારણા, ત્યાં પ્રગટે નિજજ્ઞાન,
જે જ્ઞાને ક્ષય મોહ થઈ, પામે પદ નિર્વાણ. ૪૧

ज्यां प्रगटे सुविचारणा, त्यां प्रगटे निजज्ञान;
जे ज्ञाने क्षय मोह थई, पामे पद निर्वाण ।४१।

जब सम्यक् विचारणा प्रकट होती है, तब आत्मज्ञान प्रकट होता है, आत्मज्ञान से मोह का क्षय होता है और आत्मा देह रहित मोक्षपद पाता है।

गाथा ४२

ઉપજે તે સુવિચારણા, મોક્ષમાર્ગ સમજાય,
ગુરુ શિષ્ય સંવાદથી, ભાખું ષટ્પદ આંહિ. ૪૨

उपजे ते सुविचारणा, मोक्षमार्ग समजाय;
गुरु शिष्य संवादथी, भाखुं षट्पद आंहि ।४२।

जब सम्यक् विचारणा उदित होती है, तब मोक्षमार्ग समझ में आता है। यहाँ गुरु और शिष्य के संवाद के रुप में छह पद कहता हूँ।

छह पद (गाथा ४३-४४)

गाथा ४३

આત્મા છે તે નિત્ય છે, છે કર્તા નિજકર્મ,
છે ભોક્તા વળિ મોક્ષ છે, મોક્ષ ઉપાય સુધર્મ. ૪૩

आत्मा छे ते नित्य छे, छे कर्ता निजकर्म;
छे भोक्ता वळि मोक्ष छे, मोक्ष उपाय सुधर्म ।४३।

आत्मा है। वह नित्य है। वह अपने कर्मो का कर्ता है। वह अपने कर्मो का भोक्ता है। आत्मा का मोक्ष है। मोक्ष का उपाय सम्यक् धर्म है।

गाथा ४४

છટ્ સ્થાનક સંક્ષેપમાં, છટ્ દર્શન પણ તેહ,
સમજાવા પરમાર્થને, કહ્યાં જ્ઞાનીએ એહ. ૪૪

षट् स्थानक संक्षेपमां, षट् दर्शन पण तेह;
समजावा परमार्थने, कह्यां ज्ञानीये एह ।४४।

संक्षेप में कहे गये जो छह पद है, वह छह दर्शन भी है। परमपद को समझाने के लिये ज्ञानी ने कहे हैं।

१. आत्मा है।

शंका-शिष्य उवाच (गाथा ४५-४८)

गाथा ४५

નથી દ્રષ્ટિ માં આવતો, નથી જણાતું રૂપ;
બીજો પણ અનુભવ નહીં, તેથિ ન જીવસ્વરુપ ।૪૫।

नथी द्रष्टि मां आवतो, नथी जणातुं रुप;
बीजो पण अनुभव नहीं, तेथि न जीवस्वरुप ।४५।

आत्मा आँख से दिखाई नहीं देता, आत्मा का स्वरुप भी जानने में नहीं आता, आत्मा का दूसरा भी कोई अनुभव नहीं होता, इसलिये आत्मा का अस्तित्व नहीं होता है।

गाथा ४६

અથવા દેહ જ આતમા, અથવા ઇંદ્રિય, પ્રાણ;
મિથ્યા જૂદો માનવો, નહિં જૂદું એંધાણ ।૪૬।

अथवा देह ज आत्मा, अथवा इंद्रिय, प्राण;
मिथ्या जूदो मानवो, नहिं जूदुं एंधाण ।४६।

अथवा शरीर ही आत्मा है, अथवा इन्द्रियां और प्राण ही आत्मा है। आत्मा को उनसे भिन्न मानना मिथ्या है। क्योंकि उसका अन्य कोई भिन्न लक्षण नहीं है।

गाथा ४७

વળિ જો આત્મા હોય તો, જણાય તે નહિં કેમ?
જણાય જો તે હોય તો, ઘટ પટ આદી જેમ. ૪૭

વળિ જો આત્મા હોય તો, જણાય તે નહિં કેમ?
જણાય જો તે હોય તો, ઘટ પટ આદી જેમ ।૪૭।

यदि आत्मा का अस्तित्व होता, तो वह क्यों जानने में नहीं आता? यदि वह है, तो मटका, कपडा आदि पदार्थो की भांति जानने में आना चाहिए।

गाथा ४८

માટે છે નહિં આતમા, મિથ્યા મોક્ષ ઉપાય,
એ અંતર શંકા તણો, સમજાવો સદુપાય. ૪૮

માટે છે નહિં આતમા, મિથ્યા મોક્ષ ઉપાય;
એ અંતર શંકા તણો સમજાવો સદુપાય ।૪૮।

इसलिए आत्मा नहीं होता है, मोक्ष का उपाय भी मिथ्या है। यह मेरे अंतर की शंका है, अब आप मुझे सम्यक् प्रकार से समझाने की कृपा करें।

समाधान-सद्गुरु उवाच (गाथा ४९-५८)

गाथा ४९

ભાસ્યો દેહાધ્યાસથી, આત્મા દેહ સમાન,
પણ તે બન્ને ભિન્ન છે, પ્રગટ લક્ષણે ભાન. ૪૯

भास्यो देहाध्यासथी, आत्मा देह समान;
पण ते बन्ने भिन्न छे, प्रगट लक्षणे भान ।४९।

आत्मा की देह में स्थापित एकत्वबुद्धि के भ्रम के कारण आत्मा और शरीर समान लगते हैं, किन्तु वास्तव में तो वे दोनों अपने प्रकट लक्षणों से भिन्न-भिन्न हैं।

गाथा ५०

ભાસ્યો દેહાધ્યાસથી, આત્મા દેહ સમાન,
પણ તે બન્ને ભિન્ન છે, જેમ અસી ને મ્યાન. ૫૦

भास्यो देहाध्यासथी, आत्मा देह समान;
पण ते बन्ने भिन्न छे, जेम असी ने म्यान ।५०।

आत्मा की देह में स्थापित एकत्वबुद्धि के भ्रम के कारण आत्मा और शरीर समान लगते हैं, किन्तु वास्तव में वे दोनों तलवार और म्यान की तरह भिन्न-भिन्न हैं।

गाथा ५१

જે દ્રષ્ટા છે દૃષ્ટિનો, જે જાણે છે રૂપ,
અબાધ્ય અનુભવ જે રહે, તે છે જીવસ્વરૂપ. ૫૧

जे द्रष्टा छे द्रष्टिनो, जे जाणे छे रूप;
अबाध्य अनुभव जे रहे, ते छे जीवस्वरूप ।५१।

जो द्रष्टि का द्रष्टा है, जो रुप को जानने वाला है और जिसके अनुभव को कोई बाधा नहीं पहुँचती, वह आत्मा का स्वरुप है।

गाथा ५२

છે ઇંદ્રિય પ્રત્યેકને, નિજ નિજ વિષયનું જ્ઞાન,
પાંચ ઇંદ્રિના વિષયનું, પણ આત્માને જ્ઞાન. ૫૨

छे इंद्रिय प्रत्येकने निज निज विषयनुं भान;
पांच इंद्रिना विषयनुं, पण आत्माने भान ।५२।

प्रत्येक इन्द्रिय को अपने-अपने विषय का ज्ञान होता है। लेकिन आत्मा को पांचो ही इन्द्रियों के विषयों का ज्ञान होता है।

गाथा ५३

દેહ ન જાણે તેહને, જાણે ન ઇંદ્રિ પ્રાણ,
આત્માની સત્તા વડે તેહ પ્રવર્ત્તે જાણ. ૫૩

देह न जाणे तेहने, जाणे न इंद्रि प्राण;
आत्मानी सत्ता वडे, तेह प्रवर्त्ते जाण ।५३।

शरीर आत्मा को नहीं जानता है, इन्द्रियां और प्राण भी नहीं जानते हैं। तू ऐसा जान कि आत्मा के अस्तित्व में शरीर, इन्द्रियां और प्राण जीवंत हैं।

गाथा ५४

સર્વ અવસ્થાને વિષે, ન્યારો સદા જણાય,
પ્રગટ રૂપ ચૈતન્યમય, એ એંધાણ સદાય. ૫૪

सर्व अवस्थाने विषे, न्यारो सदा जणाय;
प्रगट रूप चैतन्यमय, ए एंधाण सदाय ।५४।

आत्मा सर्व अवस्थाओं में सदा ही निराला रहता है। त्रिकाल प्रकट ऐसा चैतन्य स्वभाव आत्मा का वास्तविक लक्षण है।

गाथा ५५

ઘટ, પટ આદી જાણ તું, તેથી તેને માન,
જાણનાર તે માન નહિ, કહિયે કેવું જ્ઞાન? ૫૫

घट, पट आदी जाण तुं, तेथी तेने मान;
जाणनार ते मान नहिं, कहिये केवुं ज्ञान? ।५५।

तू मटका, कपडा, आदि पदार्थो को जानता है, इसलिये उन्हें मानता है। लेकिन तू उसे नहीं मानता है, जो इन सभी पदार्थो को जानने वाला है। तेरे ऐसे ज्ञान के बारे में क्या कहे?

गाथा ५६

પરમબુદ્ધિ કૃષ દેહમાં, સ્થૂળ દેહ મતિ અલ્પ,
દેહ હોય જો આતમા, ઘટે ન આમ વિકલ્પ. ૫૬

परमबुद्धि कृष देहमां, स्थूळ देह मति अल्प;
देह होय जो आतमा, घटे न आम विकल्प ।५६।

दुबले शरीर वाले को तीक्ष्ण बुद्धि और मोटे शरीर वाले को मंदबुद्धि पाई जाती है। यदि शरीर ही आत्मा होता, तो ऐसा घटित नहीं होना चाहिए।

गाथा ५७

જડ ચેતનનો ભિન્ન છે, કેવળ પ્રગટ સ્વભાવ;
એક પણું પામે નહીં, ત્રણે કાળ દ્વય ભાવ. ૫૭

जड चेतननो भिन्न छे, केवळ प्रगट स्वभाव;
एक पणुं पामे नहीं, त्रणे काळ द्वय भाव ।५७।

जड़ और चेतन का स्वभाव ही प्रकट भिन्न-भिन्न है। वे कभी एक नहीं हो जाते। भूत, वर्तमान और भविष्य, तीनों काल में दोनों भिन्न-भिन्न ही रहते हैं।

गाथा ५८

આત્માની શંકા કરે, આત્મા પોતે આપ;
શંકાનો કરનાર તે, અચરજ એહ અમાપ. ૫૮

आत्मानी शंका करे, आत्मा पोते आप;
शंकानो करनार ते, अचरज एह अमाप ।५८।

आत्मा के अस्तित्व की शंका आत्मा स्वयं करता है। यह आश्चर्यजनक बात है कि शंका करने वाला स्वयं ही स्वयं के अस्तित्व की शंका करता है।

२. आत्मा नित्य है।
शंका-शिष्य उवाच (गाथा ५९-६१)

गाथा ५९

આત્માનાં અસ્તિત્વના, આપે કહ્યા પ્રકાર;
સંભવ તેનો થાય છે, અંતર કર્યે વિચાર. ૫૯

आत्मानां अस्तित्वना, आपे कह्या प्रकार;
संभव तेनो थाय छे, अंतर कर्ये विचार ।५९।

आपने आत्मा के अस्तित्व को अनेक प्रकार से समझाया। अंतरंग में विचार करने पर आत्मा के अस्तित्व की संभावना पाई जाती है।

गाथा ६०

બીજી શંકા થાય ત્યાં, આત્મા નહીં અવિનાશ;
દેહ યોગથી ઊપજે, દેહ વિયોગે નાશ. ૬૦

बीजी शंका थाय त्यां, आत्मा नहीं अविनाश;
देह योगथी ऊपजे, देह वियोगे नाश ।६०।

अब दूसरी शंका यह है कि आत्मा अविनाशी नहीं है। देह का जन्म होने पर वह जन्म लेता है और देह का मरण होने पर वह नष्ट हो जाता है।

गाथा ६१

અથવા વસ્તુ ક્ષણીક છે, ક્ષણે ક્ષણે પલટાય;
એ અનુભવથી પણ નહીં, આત્મા નિત્ય જણાય. ૬૧

अथवा वस्तु क्षणीक छे, क्षणे क्षणे पलटाय;
ए अनुभवथी पण नहीं, आत्मा नित्य जणाय ।६१।

अथवा वस्तु क्षणिक होने से प्रतिक्षण बदलती रहती है, इस अनुभव से भी आत्मा नित्य जानने में नहीं आता।

समाधान-सद्गुरु उवाच (गाथा ६२-७०)

गाथा ६२

દેહ માત્ર સંયોગ છે, વળિ જડ, રૂપી દ્રશ્ય;
ચેતનનાં ઉત્પત્તિ લય, કોના અનુભવ વશ્ય?૬૨

देह मात्र संयोग छे, वळि जड, रूपी द्रश्य;
चेतननां उत्पत्ति लय, कोना अनुभव वश्य?।६२।

आत्मा के साथ रहने वाला यह शरीर मात्र क्षणिक संयोग है। शरीर चैतन्य स्वभाव रहित जड, रुपी और इन्द्रियों से दिखाई देता है। आत्मा के उत्पाद और व्यय किसके अनुभव में आते हैं?

गाथा ६३

જેના અનુભવવશ્ય એ, ઉત્પન્ન લયનું જ્ઞાન,
તે તેથી જૂદા વિના, થાય ન કેમેં ભાન. ૬૩

जेना अनुभव वश्य ए, उत्पन्न लयनुं ज्ञान;
ते तेथी जूदा विना, थाय न केमें भान ।६३।

जिसके अनुभव में उत्पाद और व्यय का ज्ञान होता है, वह उससे भिन्न हुये बिना कदापि ज्ञान नहीं होता।

गाथा ६४

જે સંયોગો દેખિયે, તે તે અનુભવદ્રશ્ય;
ઉપજે નહિ સંયોગથી, આત્મા નિત્ય પ્રત્યક્ષ. ૬૪

जे संयोगो देखिये, ते ते अनुभव द्रश्य;
उपजे नहि संयोगथी, आत्मा नित्य प्रत्यक्ष ।६४।

जो भी संयोग दिखाई देते है, वे आत्मा द्वारा ही अनुभव में आते हैं। उन संयोगो से आत्मा उत्पन्न नहीं होता है। आत्मा नित्य प्रत्यक्ष है।

गाथा ६५

જડથી ચેતન ઊપજે, ચેતનથી જડ થાય;
એવો અનુભવ કોઈને, ક્યારે કદી ન થાય. ૬૫

जडथी चेतन ऊपजे, चेतनथी जड थाय;
एवो अनुभव कोईने, क्यारे कदी न थाय ।६५।

जड़ से चेतन की उत्पत्ति होती हो और चेतन से जड़ की उत्पत्ति होती हो, ऐसा अनुभव कभी किसी को नहीं होता।

गाथा ६६

કોઈ સંયોગોથી નહીં, જેની ઉત્પત્તિ થાય;
નાશ ન તેનો કોઈમાં, તેથી નિત્ય સદાય. ૬૬

कोई संयोगोथी नहीं, जेनी उत्पत्ति थाय;
नाश न तेनो कोईमां, तेथी नित्य सदाय ।६६।

जो संयोगो से उत्पन्न नहीं होता है, वह नष्ट होकर किसी में मिलता भी नहीं है, इसलिये वह सदा ही नित्य है।

गाथा ६७

ક્રોધાદિ તરતમ્યતા, સર્પાદિકની માંય,
પૂર્વજન્મ સંસ્કાર તે, જીવ નિત્યતા ત્યાંય. ૬૭

क्रोधादी तरतम्यता, सर्पादिक नी मांय;
पूर्वजन्म संस्कार ते, जीव नित्यता त्यांय ।६७।

क्रोध आदि कषाय भावों की तारतम्यता साँप आदि में होती है, वे उनके पूर्वभवों के संस्कार होने से जीव की नित्यता सिद्ध होती है।

गाथा ६८

આત્મા દ્રવ્યે નિત્ય છે, પર્યાયે પલટાય,
બાળાદિ વય ત્રણ્યનું, જ્ઞાન એકને થાય. ૬૮

आत्मा द्रव्ये नित्य छे, पर्याये पलटाय;
बाळादी वय त्रण्यनुं, ज्ञान एकने थाय ।६८।

आत्मा द्रव्य द्रष्टि से टिककर रहता है और पर्याय द्रष्टि से बदलता रहता है। बचपन, जवानी और बुढापा, ये तीन अवस्थाओं का ज्ञान एक आत्मा को होता है।

गाथा ६९

અથવા જ્ઞાન ક્ષણીકનું, જે જાણી વદનાર,
વદનારો તે ક્ષણિક નહિ, કર અનુભવ નિર્ધાર.૬૯

अथवा ज्ञान क्षणीकनुं, जे जाणी वदनार;
वदनारो ते क्षणिक नहिं, कर अनुभव निर्धार ।६९।

अथवा क्षणिक का जो ज्ञान होता है, उसे जानकर बोलने वाला है, वह बोलने वाला क्षणिक नहीं है। अपने अनुभव से यह निर्णय कर।

गाथा ७०

કોઈ કોઈ વસ્તુનો, કેવળ હોય ન નાશ,
ચેતન પામે નાશ તો, કેમાં ભળે તપાસ. ૭૦

क्यारे कोई वस्तुनो, केवळ होय न नाश;
चेतन पामे नाश तो, केमां भळे तपास ।७०।

किसी भी वस्तु का कभी एकांत से नाश नहीं होता है। यदि आत्मा नष्ट हो जाय, तो किसमें जाकर मिले? तू उसकी खोज कर।

३. आत्मा अपने कर्म का कर्त्ता है।

शंका-शिष्य उवाच (गाथा ७१-७३)

गाथा ७१

કર્ત્તા જીવ ન કર્મનો, કર્મ જ કર્ત્તા કર્મ;
અથવા સહજ સ્વભાવ કાં, કર્મ જીવનો ધર્મ. ૭૧

कर्त्ता न जीव कर्मनो, कर्म ज कर्त्ता कर्म;
अथवा सहज स्वभाव कां, कर्म जीवनो धर्म ।७१।

आत्मा कर्म का कर्ता नहीं है, कर्म ही कर्म का कर्ता है अथवा कर्मबंध सहज स्वभाव है अथवा कर्मबंध होना, आत्मा का धर्म है।

गाथा ७२

આત્મા સદા અસંગ ને, કરે પ્રકૃતિ બંધ;
અથવા ઈશ્વરપ્રેરણા, તેથી જીવ અબંધ. ૭૨

आत्मा सदा असंग ने, करे प्रकृति बंध;
अथवा ईश्वर प्रेरणा, तेथी जीव अबंध ।७२।

आत्मा सदा ही असंग है, कार्मण वर्गणा कर्मबंध करती है अथवा ईश्वर की प्रेरणा से कर्मबंध होता है, अत: जीव अबंध है।

गाथा ७३

માટે મોક્ષ ઉપાયનો, કોઈ ન હેતુ જણાય;
કર્મતણું કર્ત્તા પણું, કાં નહિં, કાં નાહિં જાય. ૭૩

माटे मोक्ष उपायनो, कोई न हेतु जणाय;
कर्मतणुं कर्त्ता पणुं, कां नहिं, कां नहिं जाय ।७३।

इसलिये मोक्ष के उपाय का कोई कारण जानने में नहीं आता। आत्मा कर्म का कर्ता नहीं है या कर्म का कर्तापना कभी न छूट सके ऐसा है।

समाधान-सद्गुरु उवाच (गाथा ७४-७८)

गाथा ७४

હોય ન ચેતન પ્રેરણા, કોણ ગ્રહે તો કર્મ,
જડ સ્વભાવ નહિં પ્રેરણા, જુઓ વિચારી ધર્મ. ૭૪

होय न चेतन प्रेरणा, कोण ग्रहे तो कर्म
जड स्वभाव नहिं प्रेरणा, जुओ विचारी धर्म ।७४।

यदि आत्मा में राग-द्वेष के विकारीभाव न हो, तो कर्मबंधन किसे हो? जड़ वस्तु का स्वभाव प्रेरणा देने का नहीं है, इसलिये स्वभाव की द्रष्टि से चेतन और जड द्रव्यों का विचार करो।

गाथा ७५

જો ચેતન કરતું નથી, નથી થતાં તો કર્મ;
તેથી સહજ સ્વભાવ નહિ, તેમજ નહિ જીવધર્મ. ૭૫

जो चेतन करतुं नथी, नथी थतां तो कर्म;
तेथी सहज स्वभाव नहिं, तेमज नहिं जीवधर्म ।७५।

यदि आत्मा में राग-द्वेष रुपी मलिन भाव न हो, तो कर्मबंधन भी नहीं होता है। इसलिये कर्मबंध सहज स्वभाव नहीं है और आत्मा का धर्म भी नहीं है।

गाथा ७६

કેવળ હોત અસંગ જો, ભાસત તને ન કેમ?
અસંગ છે પરમાર્થથી, પણ નિજ ભાને તેમ. ૭૬

केवळ होत असंग जो, भासत तने न केम?
असंग छे परमार्थथी, पण निज भाने तेम ।७६।

यदि आत्मा एकांत से असंग होता, तो तूझे क्यों नहीं दिखाई देता? निश्चय नय से आत्मा असंग है, परन्तु ऐसा तो आत्मानुभवी ज्ञानी को जानने में आता है।

गाथा ७७

કર્તા ઈશ્વર કોઈ નહિ, ઈશ્વર શુદ્ધ સ્વભાવ,
અથવા પ્રેરક તે ગણ્યે, ઈશ્વર દોષ પ્રભાવ. ૭૭

कर्त्ता ईश्चर कोई नहिं, ईश्वर शुद्ध स्वभाव;
अथवा प्रेरक ते गण्ये, ईश्वर दोष प्रभाव ।७७।

कर्मबंध का कर्ता कोई ईश्वर नहीं है। ईश्वर तो शुद्ध अवस्था को प्राप्त आत्मा है। यदि ईश्वर को कर्मबंध का प्रेरक माने, तो वे भी अपराध में सम्मिलित होते हैं।

गाथा ७८

ચેતન જો નિજ ભાનમાં, કર્તા આપ સ્વભાવ,
વર્તે નહિ નિજભાનમાં, કર્તા કર્મ પ્રભાવ. ૭૮

चेतन जो निज भानमां, कर्त्ता आप स्वभाव;
वर्त्ते नहिं निजभानमां, कर्त्ता कर्म प्रभाव ।७८।

यदि आत्मा अपने स्वरुप में जागृत हो, तो अपने स्वभाव का कर्ता है। यदि अपने स्वरुप में जागृत न हो, तो कर्म का कर्ता होता है।

४. आत्मा अपने कर्म का भोक्ता है।

शंका-शिष्य उवाच (गाथा ७९-८१)

गाथा ७९

જીવ કર્મ કર્ત્તા કહો, પણ ભોક્તા નહિ સોય,
શું સમજે જડ કર્મ કે, ફળપરિણામી હોય. ૭૯

जीव कर्म कर्त्ता कहो, पण भोक्ता नहिं सोय;
शुं समझे जड कर्म के, फळपरिणामी होय ।७९।

आत्मा को कर्म का कर्ता कहो, परन्तु आत्मा कर्म का भोक्ता नहीं है। जड़ क्या समझे कि वह आत्मा को फल दे?

गाथा ८०

ફળદાતા ઈશ્વર ગણ્યે, ભોક્તાપણું સધાય;
એમ કહો ઈશ્વરતણું, ઈશ્વરપણું જ જાય. ૮૦

फळदाता ईश्वर गण्ये, भोक्तापणुं सधाय;
एम कहो ईश्वरतणुं, ईश्वरपणुं ज जाय ।८०।

ईश्वर को कर्म का फल देने वाला माना जाये तो भोक्तापना सिद्ध होता है। परन्तु ऐसा कहने से तो ईश्वर का ईश्वरपना ही छूट जाता है।

गाथा ८१

ઈશ્વર સિદ્ધિ થયા વિના, જગત્નિયમ નહિ હોય;
પછી શુભાશુભ કર્મનાં, ભોગ્યસ્થાન નહિં કોય. ૮૧

ईश्वर सिद्ध थया विना, जगत्नियम नहिं होय;
पछी शुभाशुभ कर्मनां, भोग्यस्थान नहिं कोय ।८१।

ईश्वर सिद्धि हुये बिना जगत की यथायोग्य व्यवस्था का संचालन नहीं हो सकता और हाँ, शुभ और अशुभ कर्मो को भोगने के स्थान भी तो नहीं है।

समाधान-सद्गुरु उवाच (गाथा ८२-८६)

गाथा ८२

ભાવકર્મ નિજકલ્પના, માટે ચેતનરૂપ;
જીવવીર્યની સ્ફૂરણા, ગ્રહણ કરે જડધૂપ. ૮૨

भावकर्म निजकल्पना, माटे चेतनरूप;
जीववीर्यनी स्फूरणा, ग्रहण करे जडधूप ।८२।

मोह, राग और द्वेष के भाव आत्मा में उत्पन्न होते हैं, इसलिये चेतनरुप है। कषाय भावों के कारण आत्मा के साथ कार्मण वर्गणा का बंध होता है।

गाथा ८३

ઝેર સુધા સમજે નહીં, જીવ ખાય ફળ થાય;
એમ શુભાશુભ કર્મનું, ભોક્તાપણું જણાય. ૮૩

झेर सुधा समजे नही, जीव खाय फळ थाय;
एम शुभाशुभ कर्मनुं, भोक्तापणुं जणाय ।८३।

जहर और अमृत ज्ञान स्वभाव रहित होने पर भी, जो व्यक्ति उन्हें खाता है, वह उनका फल भोगता है, इसीप्रकार शुभ और अशुभ कर्मो के फल को समझ सकते हैं।

गाथा ८४

એક રાંકને એકનૃપ, એ આદી જે ભેદ;
કારણ વિના ન કાર્ય તે, તે જ શુભાશુભવેધ. ૮૪

एक रांक ने एक नृप, ए आदी जे भेद;
कारण विना न कार्य ते, ते ज शुभाशुभवेध ।८४।

एक व्यक्ति निर्धन और एक व्यक्ति राजा है। ऐसे और भी जो भेद हैं, वे शुभ और अशुभ कर्मो के फल को सिद्ध करते हैं। क्योंकि कारण के बिना कार्य नहीं होता है।

गाथा ८५

ફળદાતા ઈશ્વર તણી, એમાં નથી જરૂર,
કર્મ સ્વભાવે પરિણમે, થાય ભોગથી દૂર. ૮૫

फळदाता ईश्वरतणी, एमां नथी जरूर;
कर्म स्वभावे परिंगमें, थाय भोगथी दूर ।८५।

कर्मो को फल देने के लिये बीच में ईश्वर के होने की कोई आवश्यकता नहीं होती। कर्म अपने-अपने स्वभाव के अनुरुप परिणमित होते है और फल देकर वे आत्मा से दूर हो जाते हैं।

गाथा ८६

તે તે ભોગ્ય વિશેષના, સ્થાનક દ્રવ્ય સ્વભાવ,
ગહન વાત છે શિષ્ય આ, કહિં સંક્ષેપે સાવ. ૮૬

ते ते भोग्य विशेषना, स्थानक-द्रव्य स्वभाव;
गहन वात छे शिष्य आ. कहिं संक्षेपे साव ।८६।

द्रव्य के अपने स्वभाव के अनुसार कर्मो को भोगने के स्थान भी होते हैं। हे शिष्य! यह बात बड़ी रहस्यपूर्ण है, लेकिन यहाँ संक्षिप्त में कही है।

५. आत्मा का मोक्ष है।

शंका-शिष्य उवाच (गाथा ८७-८८)

गाथा ८७

કર્તા ભોક્તા જીવ હો, પણ તેનો નહિ મોક્ષ,
વીત્યો કાળ અનંત પણ, વર્તમાન છે દોષ. ૮૭

कर्त्ता भोक्ता जीव हो, पण तेनो नहिं मोक्ष;
वीत्यो काळ अनंत पण, वर्तमान छे दोष ।८७।

भले ही जीव कर्मो का कर्ता और भोक्ता हो, परन्तु उसका मोक्ष नहीं होता है। अनन्त काल बीतने पर भी जीव में अशुद्धता कायम है।

गाथा ८८

શુભ કરે ફળ ભોગવે, દેવાદી ગતિમાંય;
અશુભ કરે નર્કાદિ ફળ, કર્મ રહીત ન ક્યાંય. ૮૮

शुभ करे फळ भोगवे, देवादी गतिमांय;
अशुभ करे नर्कादिं फळ, कर्म रहीत न क्यांय ।८८।

यदि आत्मा शुभ कर्म करे, तो उसका फल देव आदि गतियों में भोगता है। यदि आत्मा अशुभ कर्म करे, तो उसका फल नरक आदि गतियों में भोगता है। आत्मा कर्म रहित कहीं भी नहीं होता है।

समाधान-सद्गुरु उवाच (गाथा ८९-९१)

गाथा ८९

જેમ શુભાશુભ કર્મપદ, જાણ્યાં સફળ પ્રમાણ;
તેમ નિવૃત્તિ સફળતા, માટે મોક્ષ સુજાણ ।૮૯।

जेम शुभाशुभ कर्मपद, जाण्यां सफळ प्रमाण;
तेम निवृत्ति सफळता, माटे मोक्ष सुजाण ।८९।

जिस प्रकार तुमने शुभ और अशुभ कर्मो का भोक्तापना जाना, उसी प्रकार तुम इन कर्मो के अभावपूर्वक प्रकट होने वाला मोक्ष भी सम्यक् प्रकार से जानो।

गाथा ९०

વીત્યો કાળ અનંત તે, કર્મ શુભાશુભ ભાવ;
તેહ શુભાશુભ છેદતા, ઉપજે મોક્ષ સ્વભાવ ।૯૦।

वीत्यो काळ अनंत ते, कर्म शुभाशुभ भाव;
तेह शुभाशुभ छेदता, उपजे मोक्ष स्वभाव ।९०।

शुभ और अशुभ कर्मो के बंधन में अनंत काल बीता है। जब शुभ और अशुभ कर्मो का नाश होता है, तब आत्मा का शुद्ध स्वभाव प्रकट होता है।

गाथा ९१

દેહાદિક સંયોગનો, આત્યંતિક વિયોગ,
સિદ્ધ મોક્ષ શાશ્વત પદે, નિજ અનંત સુખ ભોગ. ૯૧

देहादिक संयोगनो, आत्यंतिक वियोग;
सिद्ध मोक्ष शाश्वत पदे, निज अनंत सुख भोग ।९१।

शरीर आदि संयोगो का सदाकाल के लिये वियोग होने पर आत्मा सिद्ध परमात्मा होता है। वहाँ सदाकाल टिककर रहने वाले मोक्ष में अपने अनन्त सुख को भोगता है।

६. आत्मा के मोक्ष का उपाय है।

शंका-शिष्य उवाच (गाथा ९२-९६)

गाथा ९२

હોય કદાપી મોક્ષપદ, નહિ અવિરોધ ઉપાય;
કર્મો કાળ અનંતનાં, શાથી છેદ્યાં જાય? ૯૨

होय कदापी मोक्षपद, नहिं अविरोध उपाय;
कर्मो काळ अनंतनां, शाथी छेद्यां जाय?।९२।

मोक्ष पद भी हो सकता है, परन्तु मोक्ष का उपाय नहीं होता है। अनन्त काल से बंधे हुये कर्मो का नाश कैसे कर सकते हैं?

गाथा ९३

અથવા મત દર્શન ઘણાં, કહે ઉપાય અનેક;
તેમા મત સાચો કયો, બને ન એહ વિવેક. ૯૩

अथवा मत दर्शन घणां, कहे उपाय अनेक;
तेमा मत साचो कयो, बने न एह विवेक ।९३।

अथवा अनेक मत और दर्शन मोक्ष के उपाय का अनेक प्रकार से वर्णन करते है। उनमें सच्चा उपाय क्या है? यह निर्णय लिया नहीं जा सकता है।

गाथा ९४

કયી જાતિમાં મોક્ષ છે, કયા વેષમાં મોક્ષ;
એનો નિશ્ચય ના બને, ઘણા ભેદ એ દોષ. ૯૪

कयी जातिमां मोक्ष छे, कया वेषमां मोक्ष;
एनो निश्चय ना बने, घणा भेद ए दोष ।९४।

किस जाति में जन्म लेने पर मोक्ष होता है? कैसे वस्त्र पहनने से मोक्ष होता है? इसका निर्णय नहीं लिया जा सकता, क्योंकि उसके अनेक भेद होना यह दोष है।

गाथा ९५

તેથી એમ જણાય છે, મળે ન મોક્ષ ઉપાય;
જીવાદી જાણ્યા તણો, શો ઉપકાર જ થાય? ૯૫

तेथी एम जणाय छे, मळे न मोक्ष उपाय;
जीवादी जाण्या तणो, शो उपकार ज थाय?।९५।

इसलिये ऐसा जानने में आता हैं कि मोक्ष का उपाय नहीं होता है। यदि मोक्ष का उपाय न हो, तो आत्मा के अस्तित्व, आदि जानने का लाभ क्या?

गाथा ९६

પાંચે ઉત્તરથી થયું, સમાધાન સર્વાંગ;
સમજું મોક્ષ ઉપાય તો, ઉદય ઉદય સદ્‌ભાગ્ય. ૯૬

पांचे उत्तरथी थयुं, समाधान सर्वांग;
समजुं मोक्ष उपाय तो, उदय उदय सद्‌भाग्य ।९६।

मुझे पांच उत्तर के माध्यम से पूर्ण रुप से समाधान हुआ है। यदि मैं मोक्ष के उपाय को समझ लूं, तो मेरे सद्‌भाग्य का उदय होगा, उदय होगा।

समाधान-सद्गुरु उवाच (गाथा ९७-११८)

गाथा ९७

પાંચે ઉત્તરની થઈ, આત્મા વિષે પ્રતીત;
થાશે મોક્ષોપાયની, સહજ પ્રતિત એ રીત ૯૭

पांचे उत्तरनी थई, आत्मा विषे प्रतीत;
थाशे मोक्षोपायनी, सहज प्रतित ए रीत ।९७।

जैसे तुझे पांच उत्तर के माध्यम से आत्मा के सम्बन्ध में प्रतीति हुई, ऐसे ही मोक्ष के उपाय की भी सहज प्रतीति होगी।

गाथा ९८

કર્મ-ભાવ અજ્ઞાન છે, મોક્ષભાવ નિજવાસ;
અંધકાર અજ્ઞાનસમ, નાશે જ્ઞાનપ્રકાશ ૯૮

कर्म-भाव अज्ञान छे, मोक्षभाव निजवास;
अंधकार अज्ञानसम, नाशे ज्ञानप्रकाश ।९८।

निज आत्मा सम्बन्धी अज्ञानता आत्मा का बंधन है। आत्म स्वरुप में स्थिरता मुक्ति है। प्रकाश समान ज्ञान, अंधकार समान अज्ञान का नाश करता है।

गाथा ९९

જે જે કારણ બંધનાં, તેહ બંધનો પંથ;
તે કારણ છેદકદશા, મોક્ષ-પંથ ભવઅંત. ૯૯

जे जे कारण बंधनां, तेह बंधनो पंथ;
ते कारण छेदकदशा, मोक्ष-पंथ भवअंत ।९९।

जो बंधन के कारण हैं, वे बंधन के मार्ग हैं। उनका नाश करने वाली आत्मा की शुद्ध अवस्था मोक्षमार्ग है कि जिससे भवभ्रमण का अंत होता है।

गाथा १००

રાગ, દ્વેષ અજ્ઞાન એ, મુખ્ય કર્મની ગ્રંથ;
થાય નિવૃત્તિ જેહથી, તે જ મોક્ષનો પંથ. ૧૦૦

राग, द्वेष अज्ञान ए, मुख्य कर्मनी ग्रंथ;
थाय निवृत्ति जेहथी, ते ज मोक्षनो पंथ ।१००।

राग, द्वेष और अज्ञान ये कर्मबंधन की मूल ग़ठान है। अहो! जिसके माध्यम से उनसे मुक्ति मिलती है, वही मोक्ष का मार्ग है।

गाथा १०१

આત્મા સત ચૈતન્યમય, સર્વાભાસ રહીત;
જેથી કેવળ પામિયે, મોક્ષપંથ તે રીત ૧૦૧

आत्मा सत चैतन्यमय, सर्वाभास रहीत;
जेथी केवळ पामिये, मोक्षपंथ ते रीत ।१०१।

आत्मा त्रिकाल सत्ता स्वरुप, चैतन्य से परिपूर्ण एवं सर्व मिथ्याभास रहित है। जिससे ऐसे शुद्ध आत्मा की प्राप्ति होती है, वह मोक्ष का मार्ग है।

गाथा १०२

કર્મ અનંત પ્રકારનાં, તેમાં મુખ્યે આઠ;
તેમાં મુખ્યે મોહિનિય, હણાય તે કહું પાઠ ૧૦૨

कर्म अनंत प्रकारनां, तेमां मुख्ये आठ;
तेमां मुख्ये मोहिनिय, हणाय ते कहुं पाठ ।१०२।

कर्म अनंत प्रकार के होते हैं। उनमें मुख्यरुप से आठ प्रकार हैं। उनमें मोहनीय कर्म मुख्य है। यहाँ उसके नाश करने की विधि कहता हूँ।

गाथा १०३

कर्म मोहिनीय भेद बे, दर्शन चारित्र नाम,
हणे बोध वीतरागता, अचूक उपाय आम. १०३

कर्म मोहिंनिय भेद बे, दर्शन चारिंत्र नाम;
हणे बोध वीतरागता, अचूक उपाय आम ।१०३।

मोहनीय कर्म के दो भेद हैं। दर्शन मोहनीय और चारित्र मोहनीय। आत्मज्ञान और वीतरागता से उन कर्मो का नाश होता है। वास्तव में यही एक मात्र उपाय है।

गाथा १०४

કર્મબંધ ક્રોધાદિથી, હણે ક્ષમાદિક તેહ,
પ્રત્યક્ષ અનુભવ સર્વને, એમાં શો સંદેહ? ૧૦૪

कर्मबंध क्रोधादिंथी, हणे क्षमादिंक तेह;
प्रत्यक्ष अनुभव सर्वने, एमां शो संदेह? ।१०४।

क्रोध आदि कषायभावो से कर्मबंध होता है और क्षमा आदि भावों से उन कषायों का नाश होता है। समस्त जीवों को ऐसा अनुभव होता है, इसमें संदेह क्या है?

गाथा १०५

છોડી મતદર્શનતણો, આગ્રહ તેમ વિકલ્પ,
કહ્યો માર્ગ આ સાધશે, જન્મ તેહના અલ્પ. ૧૦૫

छोडी मत दर्शन तणो, आग्रह तेम विकल्प;
कह्यो मार्ग आ साधशे, जन्म तेहना अल्प ।१०५।

जो जीव मत और दर्शन का आग्रह एवं तत्सम्बन्धी विकल्प छोडकर यहाँ कहे गये मोक्षमार्ग की साधना करेगा, वह जीव कुछ ही भव में मोक्ष पायेगा।

गाथा १०६

ષટ્ પદનાં ષટ્ પ્રશ્ન તેં, પૂછ્યાં કરી વિચાર,
તે પદની સર્વાંગતા, મોક્ષમાર્ગ નિર્ધાર. ૧૦૬

षट्पदनां षट् प्रश्न तें, पूछ्यां करी विचार;
ते पदनी सर्वांगता, मोक्षमार्ग निर्धार ।१०६।

तूने छह पद से सम्बन्धित छह प्रश्न विचार करके पूछे है। उन पदों को सर्वांगरुप से जानने पर मोक्षमार्ग प्रकट होता है, ऐसा निश्चय कर।

गाथा १०७

જાતિ, વેષનો ભેદ નહિ, કહ્યો માર્ગ જો હોય;
સાધે તે મુક્તી લહે, એમાં ભેદ ન કોય. ૧૦૭

जाति वेषनो भेद नहि, कह्यो मार्ग जो होय;
साधे ते मुक्ती लहे, एमां भेद न कोय ।१०७।

मोक्षमार्ग में जाति और वेष का भेद नहीं होता है। जो जीव साधना करता है, वह जीव मोक्ष पाता है। उसमें कोई भेदभाव नहीं होता।

गाथा १०८

કષાયની ઉપશાંતતા, માત્ર મોક્ષ અભિલાષ;
ભવે ખેદ અંતરદયા, તે કહિયે જિજ્ઞાસ. ૧૦૮

कषायनी उपशांतता, मात्र मोक्ष अभिलाष;
भवे खेद अंतरदया, ते कहिये जिज्ञास ।१०८।

जिस जीव को कषाय की उपशांतता हो, एक मात्र मोक्ष की अभिलाषा हो, भवभ्रमण का खेद होता हो और निजात्मा के प्रति करुणा हो, उसे जिज्ञासु कहते है।

गाथा १०९

તે જિજ્ઞાસુ જીવને, થાય સદ્‌ગુરુબોધ,
તો પામે સમકીતને, વર્તે અંતર શોધ. ૧૦૯

તે जिज्ञासु जीवने, थाय सद्‌गुरुबोध;
तो पामे समकीतने, वर्ते अंतर शोध ।१०९।

उस जिज्ञासु जीव को सद्‌गुरु का बोध प्राप्त हो, तो समकित पाता है और अंतरंग में उसकी खोज बनी ही रहती है।

गाथा ११०

મતદર્શન આગ્રહ તજી, વર્તે સદ્‌ગુરુલક્ષ,
લહે શુદ્ધ સમકીત તે, જેમાં ભેદ ન પક્ષ. ૧૧૦

मतदर्शन आग्रह तजी, वर्ते सद्‌गुरुलक्ष;
लहे शुद्ध समकीत ते, जेमां भेद न पक्ष ।११०।

जो जीव मत एवं दर्शन का आग्रह छोडकर सद्‌गुरु निर्दिष्ट मार्ग पर चलता है, वह जीव शुद्ध समकित पाता है, जिसमें कोई भेद और नयपक्ष नहीं है।

गाथा १११

વર્તે નિજ સ્વભાવનો, અનુભવ લક્ષ પ્રતીત;
વૃત્તિ વહે નિજભાવમાં, પરમાર્થે સમકીત ।।૧૧૧।

वर्त्ते निज स्वभावनो, अनुभव लक्ष प्रतीत;
वृत्ति वहे निजभावमां, परमार्थे समकीत ।१११।

जब आत्मा निज स्वभाव को जाने, माने और अनुभव करे, तब आत्मा की वर्तमान पर्याय आत्मा के स्वभाव की ओर बहती है, तब परमार्थ से समकित प्रकट होता है।

गाथा ११२

વર્ધમાન સમકીત થઈ, ટાળે મિથ્યાભાસ;
ઉદય થાય ચારિત્રનો, વીતરાગપદ વાસ ।।૧૧૨।

वर्धमान समकीत थई, टाळे मिथ्याभास;
उदय थाय चारित्रनो, वीतरागपद वास ।११२।

आत्मा की परिणति की शुद्धि की वृद्धि के बल पर आत्मा की मलिनता का नाश होता है और पूर्ण वीतरागता प्रकट होने पर चारित्र की पूर्ण शुद्धता प्रकट होती है।

गाथा ११३

કેવળ નિજ સ્વભાવનું, અખંડ વર્તે જ્ઞાન,
કહિયે કેવળ જ્ઞાન તે, દેહ છતાં નિર્વાણ. ૧૧૩

केवल निजस्वभावनुं, अखंड वर्त्ते ज्ञान;
कहिये केवळ ज्ञान ते, देह छतां निर्वाण ।११३।

आत्मा के पूर्ण निर्विकल्प अखंड ज्ञान को केवलज्ञान कहते हैं, देह होने पर भी अरिहंत भगवान जीवनमुक्त है।

गाथा ११४

કોટિ વર્ષનું સ્વપ્ન પણ, જાગ્રત થતાં શમાય,
તેમ વિભાવ અનાદિનો, જ્ઞાન થતાં દુર થાય. ૧૧૪

कोटि वर्षनुं स्वप्न पण, जाग्रत थतां शमाय;
तेम विभाव अनादिनो, ज्ञान थतां दुर थाय ।११४।

जिसप्रकार नींद से जागने पर करोडों वर्षो से चलता स्वप्न भी छूट जाता है, उसीप्रकार आत्मज्ञान प्रकट होते ही अनादिकाल का विभाव दूर हो जाता है।

गाथा ११५

છૂટે દેહાધ્યાસ તો, નહિ કર્ત્તા તું કર્મ,
નહિ ભોક્તા તું તેહનો, એજ ધર્મનો મર્મ. ૧૧૫

छूटे देहाध्यास तो, नहिं कर्त्ता तुं कर्म;
नहिं भोक्ता तुं तेहनो, एज धर्मनो मर्म ।११५।

यदि देह के प्रति एकत्वबुद्धि छूट जाय, तो तू कर्म का कर्ता या भोक्ता नहीं है। यही धर्म का रहस्य है।

गाथा ११६

એજ ધર્મથી મોક્ષ છે, તું છો મોક્ષ સ્વરૂપ;
અનંત દર્શન જ્ઞાન તું, અવ્યાબાધ સ્વરૂપ. ૧૧૬

एज धर्मथी मोक्ष छे, तुं छो मोक्ष स्वरूप;
अनंत दर्शन ज्ञान तुं, अव्याबाध स्वरूप ।११६।

इसी धर्म से मोक्ष प्राप्ति है। वास्तव में तुम स्वयं मोक्ष स्वरुप हो। तुम अनन्त दर्शन एवं अनन्त ज्ञान स्वरुप हो। तुम स्वयं अव्याबाध सुख स्वरुप हो।

गाथा ११७

શુદ્ધ બુદ્ધ ચૈતન્યઘન, સ્વયં જ્યોતિ સુખધામ;
બીજું કહિયે કેટલું, કર વિચાર તો પામ. ૧૧૭

शुद्ध बुद्ध चैतन्यघन, स्वयं ज्योति सुखधाम;
बीजुं कहिये केटलुं, कर विचार तो पाम ।११७।

चैतन्य स्वभावी आत्मा शुद्ध एवं ज्ञान का घनपिण्ड है। आत्मा स्वयं अपने से प्रकाशित है, सुख का धाम है, अधिक क्या कहें? यदि तुम आत्मा के उपरोक्त स्वरुप का विचार करोगे, तो आत्मानुभूति पाओगे।

गाथा ११८

નિશ્ચય સર્વે જ્ઞાનિનો, આવી અત્ર શમાય;
ધરી મૌનતા એમ કહિ, સહજ સમાધીમાંય. ૧૧૮

निश्चय सर्वे ज्ञानिनो, आवी अत्र शमाय;
धरी मौनता एम कहिं, सहज समाधीमांय ।११८।

समस्त ज्ञानियों का निश्चय यहाँ आकर समा जाता है, ऐसा कहकर सद्गुरु ने मौन धारण किया और सहज समाधि में स्थिर हुये।

शिष्य बोधबीज प्राप्ति (गाथा ११९-१२७)

गाथा ११९

સદ્ગુરુના ઉપદેશથી, આવ્યું અપૂર્વ ભાન,
નિજપદ નિજમાંહી લહ્યું, દૂર થયું અજ્ઞાન. ૧૧૯

सद्गुरुना उपदेशथी, आव्युं अपूर्व भान;
निजपद निजमांही लह्युं, दूर थयुं अज्ञान ।११९।

शिष्य को सद्गुरु के उपदेश से पूर्व में कभी प्रकट नहीं हुआ था, ऐसा ज्ञान प्रकट हुआ। अपना स्वरुप अपने में प्राप्त हुआ और अज्ञान दूर हुआ।

गाथा १२०

ભાસ્યું નિજ સ્વરૂપ તે, શુદ્ધ ચેતના રૂપ;
અજર અમર અવિનાશિ ને, દેહાતીત સ્વરૂપ. ૧૨૦

भास्युं निज स्वरुप ते, शुद्ध चेतना रुप;
अजर अमर अविनाशि ने, देहातीत स्वरुप ।१२०।

शिष्य को आत्मा का स्वरुप शुद्ध चैतन्यमय, अजर, अमर, अविनाशी और देहातीत अनुभव में आया।

गाथा १२१

કર્તા ભોક્તા કર્મનો, વિભાવ વર્તે જ્યાંય;
વૃત્તિ વહી નિજભાવમાં, થયો અકર્તા ત્યાંય.૧૨૧

कर्त्ता भोक्ता कर्मनो, विभाव वर्त्ते ज्यांय;
वृत्ति वही निजभावमां, थयो अकर्त्ता त्यांय ।१२१।

जब तक आत्मभ्रांति है, तब तक आत्मा कर्मो का कर्ता एवं भोक्ता है। लेकिन जब आत्मा का उपयोग निज चैतन्य स्वभाव की ओर बहता है, तब आत्मा कर्मो का अकर्ता होता है।

गाथा १२२

અથવા નિજપરિણામ જે, શુદ્ધ ચેતનારૂપ;
કર્તા ભોક્તા તેહ નો, નિર્વિકલ્પ સ્વરૂપ.૧૨૨

अथवा निजपरिणाम जे, शुद्ध चेतनारूप;
कर्त्ता भोक्ता तेह नो, निर्विकल्प स्वरूप ।१२२।

अथवा आत्मा अपने शुद्ध चैतन्यमय परिणाम एवं निर्विकल्प अनुभूति का कर्ता एवं भोक्ता होता है।

गाथा १२३

મોક્ષ કહ્યો નિજશુદ્ધતા, તે પામે તે પંથ;
સમજાવ્યો સંક્ષેપમાં, સકલ માર્ગ નિર્ગ્રંથ. ૧૨૩

मोक्ष कह्यो निजशुद्धता, ते पामे ते पंथ;
समजाव्यो संक्षेपमां, सकल मार्ग निर्ग्रंथ ।१२३।

आत्मा की अपनी शुद्धता मोक्ष है, जिससे वह शुद्धता प्रकट होती है, वह मोक्षमार्ग है। सद्गुरु ने निर्ग्रंथ मोक्षमार्ग संक्षिप्त में समझाया है।

गाथा १२४

અહો! અહો! શ્રી સદ્‌ગુરુ, કરુણાસિંધુ અપાર;
આ પામર પર પ્રભુ કર્યો, અહો! અહો! ઉપકાર. ૧૨૪

अहो! अहो! श्री सद्‌गुरु, करुणासिंधु अपार;
आ पामर पर प्रभु कर्यो, अहो! अहो! उपकार ।१२४।

अहो! अहो! अपार करुणा के सागर! आप प्रभु ने इस पामर पर अहो! अहो! उपकार किया है।

गाथा १२५

શું પ્રભુ ચરણે ધરું, આત્માથી સૌ હીન;
તે તો પ્રભુએ આપિયો, વર્તું ચરણાધીન. ૧૨૫

शुं प्रभु चरण कने धरुं, आत्माथी सौ हीन;
ते तो प्रभुए आपियो, वर्तुं चरणाधीन ।१२५।

हे प्रभु! मैं आपके चरणों में क्या समर्पित करुं? जगत के समस्त पदार्थ आत्मा से तो हीन ही है। वह आत्मा तो आप प्रभु ने मुझे दिया है, अब मैं आपको क्या अर्पण करुं? बस, इतना करुंगा कि आपके चरणो के आधीन जीवन जीऊंगा।

गाथा १२६

આ દેહાદી આજથી, વર્તો પ્રભુ આધીન,
દાસ, દાસ હું દાસ છું, તેહ પ્રભુનો દીન. ૧૨૬

आ देहादी आजथी, वर्तो प्रभु आधीन;
दास, दास हुं दास छुं, तेह प्रभुनो दीन ।१२६।

हे प्रभु! आज से यह शरीर आदि आपको समर्पित करता हूँ। मैं आप प्रभु का दास हूँ, दास हूँ और दास हूँ।

गाथा १२७

ષટ્ સ્થાનક સમજાવિને, ભિન્ન બતાવ્યો આપ;
મ્યાન થકી તરવારવત્, એ ઉપકાર અમાપ ।।૧૨૭।।

षट् स्थानक समजाविने, भिन्न बताव्यो आप;
म्यान थकी तरवारवत्, ए उपकार अमाप ।१२७।

छह पद समझाकर आपने तलवार और म्यान की भांति आत्मा को शरीर से भिन्न बताया। आपका मुझ पर मापा न जा सके, ऐसा उपकार है।

उपसंहार (गाथा १२८-१४२)

गाथा १२८

દર્શન ષટે શમાય છે, આ ષટ્ સ્થાનક માંહિ;
વિચારતાં વિસ્તારથી, સંશય રહે ન કાંઈ ।।૧૨૮।।

दर्शन षटे शमाय छे, आ षट् स्थानक मांहि;
विचारतां विस्तारथी, संशय रहे न कांई ।१२८।

छहों दर्शन इन छहों पदों में समाविष्ट होते है। उसका विशालबुद्धि से विचार करने पर किसी भी प्रकार का संशय नहीं रहता है।

गाथा १२९

આત્મભ્રાંતિ સમ રોગ નહિ, સદ્‌ગુરૂ વૈદ્ય સુજાણ;
ગુરૂ આજ્ઞા સમ પથ્ય નહિ, ઔષધ વિચાર ધ્યાન. ૧૨૯

आत्मभ्रांति सम रोग नहिं, सद्‌गुरु वैद्य सुजाण;
गुरु आज्ञा सम पथ्य नहिं, औषध विचार ध्यान ।१२९।

आत्मभ्रांति के समान कोई रोग नहीं है। सद्‌गुरु के समान कोई वैद्य नहीं है। सद्‌गुरु की आज्ञा के समान कोई उपचार नहीं हैं। विचार और ध्यान के समान कोई औषधि नहीं है।

गाथा १३०

જો ઇચ્છો પરમાર્થને, કરો સત્ય પુરૂષાર્થ;
ભવસ્થિતિ આદી નામ લઈ, છેદો નહિ આત્માર્થ ૧૩૦

जो इच्छो परमार्थ तो, करो सत्य पुरुषार्थ;
भवस्थिति आदी नाम लई, छेदो नहिं आत्मार्थ ।१३०।

यदि आप परमपद पाना चाहते हो, तो सत्य पुरुषार्थ करो। भवस्थिति आदि नाम लेकर आत्मतत्त्व की खोज बन्द मत करो।

गाथा १३१

નિશ્ચયે વાણી સાંભળી, સાધન તજવાં નોય,
નિશ્ચયે રાખી લક્ષમાં, સાધન કરવાં સોય. ૧૩૧

निश्चय वाणी सांभळी, साधन तजवां नोय;
निश्चय राखी लक्षमां, साधन करवां सोय ।१३१।

निश्चय नय की मुख्यता से कही गई वाणी सुनकर अनुभूति के साधनों को नहीं छोडना चाहिए। निश्चय को लक्ष्य में रखकर व्यवहार साधन का आश्रय लेना चाहिए।

गाथा १३२

નય નિશ્ચયે એકાંતથી, આમાં નથી કહેલ,
એકાંતે વ્યવહાર નહિ, બન્ને સાથે રહેલ. ૧૩૨

नय निश्चय एकांतथी, आमां नथी कहेल;
एकांते व्यवहार नहि, बन्ने साथे रहेल ।१३२।

इस शास्त्र में एकांत निश्चयनय से या एकांत व्यवहारनय से वर्णन नहीं किया है। दोनों नय एक साथ ही रहते हैं।

गाथा १३३

ગચ્છ મતની જે કલ્પના, તે નહિ સદ્વ્યવહાર,
ભાન નહીં નિજ રૂપનું, તે નિશ્ચય નહીં સાર. ૧૩૩

गच्छमतनी जे कल्पना, ते नहिं सद्व्यवहार;
भान नहीं निजरुपनुं, ते निश्चय नहीं सार ।१३३।

गच्छ या मत की जो कल्पना है, वह वास्तविक व्यवहार नहीं है। इसीप्रकार जहाँ निज आत्मा की पहिचान न हो, वहाँ निश्चय नहीं होता है।

गाथा १३४

આગળ જ્ઞાની થઈ ગયા, વર્ત્તમાનમાં હોય,
થાશે કાળ ભવિષ્યમાં, માર્ગ ભેદ નહિં કોય. ૧૩૪

आगळ ज्ञानी थई गया, वर्त्तमानमां होय;
थाशे काळ भविष्यमां, मार्ग भेद नहिं कोय ।१३४।

भूतकाल में जो ज्ञानी हुये, वर्तमान जो ज्ञानी है एवं भविष्य में जो ज्ञानी होंगे, उनके ज्ञानी होने में कोई मार्गभेद नहीं है।

गाथा १३५

સર્વ જીવ છે સિદ્ધસમ, જે સમજે તે થાય,
સદ્‌ગુરુ આજ્ઞા જિનદશા, નિમિત્ત કારણમાંય.૧૩૫

सर्व जीव छे सिद्ध सम, जे समजे ते थाय;
सद्‌गुरु आज्ञा जिनदशा, निमित्त कारणमांय ।१३५।

द्रव्य स्वभाव से सभी जीव सिद्ध है। जो जीव ऐसा समझता है, वह पर्याय में भी सिद्ध होता है। सद्‌गुरु की आज्ञा और जिनेन्द्र भगवान का स्वरुप उसमें निमित्त कारण होता है।

गाथा १३६

ઉપાદાનનું નામ લઈ, જે જે તજે નિમિત્ત,
પામે નહિં સિદ્ધત્વને, રહે ભ્રાંતિમાં સ્થિત. ૧૩૬

उपादाननुं नाम लई, ए जे तजे निमित्त,
पामे नहिं सिद्धत्वने, रहे भ्रांतिमां स्थित ।१३६।

जो जीव उपादान का नाम लेकर, निमित्त को छोड देते हैं, वे जीव मोक्ष नहीं पाते और आत्मभ्रांति में अटक जाते हैं।

गाथा १३७

મુખથી જ્ઞાન કથે અને, અંતર છુટ્યો ન મોહ;
તે પામર પ્રાણી કરે, માત્ર જ્ઞાનિનો દ્રોહ.૧૩૭

मुखथी ज्ञान कथे अने, अंतर छुट्यो न मोह;
ते पामर प्राणी करे, मात्र ज्ञानिनो द्रोह ।१३७।

जो लोग मात्र शास्त्र की बाते करते हैं और आत्मा में से मोह नहीं छूटा है, वे पामर जीव ज्ञानी का मात्र अनादर करते हैं।

गाथा १३८

દયા, શાંતિ, સમતા, ક્ષમા, સત્ય, ત્યાગ, વૈરાગ્ય,
હોય મુમુક્ષુ ઘટ વિષે, એહ સદા સુજાગ્ય.૧૩૮

दया, शांति, समता, क्षमा, सत्य, त्याग, वैराग्य;
होय मुमुक्षु घट विषे, एह सदा सुजाग्य ।१३८।

दया, शांति, समता, क्षमा, सत्य, त्याग, वैराग्य - ये लक्षण मोक्ष की इच्छा वाले मुमुक्षु में सदा ही जागृत होते हैं।

गाथा १३९

મોહ ભાવ ક્ષય હોય જ્યાં, અથવા હોય પ્રશાંત,
તે કહિયે જ્ઞાની દશા, બાકી કહિયે ભ્રાંત ૧૩૯

मोह भाव क्षय होय ज्यां, अथवा होय प्रशांत;
ते कहिये ज्ञानी दशा, बाकी कहिये भ्रांत ।१३९।

जिन्हें मोहभाव का क्षय या उपशम हुआ हो, उन्हें ज्ञानी कहते हैं। उनके अतिरिक्त सर्व जीवों को आत्मभ्रांति हैं।

गाथा १४०

સકળ જગત તે ઠઠવત, અથવા સ્વપ્ન સમાન,
તે કહિયે જ્ઞાનીદશા, બાકી વાચા જ્ઞાન. ૧૪૦

सकल जगत ते एठवत, अथवा स्वप्न समान;
ते कहिये ज्ञानीदशा, बाकी वाचा ज्ञान ।१४०।

जब सारा जगत झूंठन समान अथवा स्वप्न समान जानने में आये, तब ज्ञानीपना प्रगट हुआ, ऐसा कहा जाता है। इनके अतिरिक्त सभी को कहने मात्र का ज्ञान है।

गाथा १४१

સ્થાનક પાંચ વિચારિને, છઠ્ઠે વર્ત્તે જેહ,
પામે સ્થાનક પાંચમું, એમાં નહિ સંદેહ. ૧૪૧

स्थानक पांच विचारिने, छठ्ठे वर्त्ते जेह;
पामे स्थानक पांचमु, एमां नहिं संदेह ।१४१।

जो जीव पांच पद का विचार करके छठ्ठे पद पर चलता है, वह जीव पांचवे मोक्षपद को पाता है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

गाथा १४२

દેહ છતાં જેની દશા, વર્ત્તે દેહાતીત,
તે જ્ઞાનીનાં ચરણમાં, હો! વંદન અગણીત. ૧૪૨

देह छतां जेनी दशा, वर्त्ते देहातीत;
ते ज्ञानीनां चरणमां, हो! वंदन अगणीत ।१४२।

जिन्हें शरीर होने पर भी, शरीर रहित दशा वर्तती है, उन ज्ञानी के चरणों में अगणित बार वंदन हो।

Centers in Asia

NO.	COUNTRY	CENTER OF THE MISSION	LANGUAGES
1	India	Umarala (Prime Center), Ahmedabad, Nadiad, Vavania, Dharampur, Koba, Rajkot, Bharuch, Mumbai, Nashik, Pune, Deolali, Gajpantha, Nagpur, Jaipur, Udaipur, Jodhpur, Chittorgarh, Kota, Ramganjmandi, Bhinmal, New Delhi, Bhatinda, Chandigarh, Srinagar, Bhopal, Indore, Neemach, Lucknow, Banaras, Patna, Ranchi, Sammetsikhar, Kochi, Chennai, Pondicherry, Hyderabad, Vijayvada, Bengluru, Mysore, Kolkata, Trivendrum, Kanyakumari	Gujarati, Hindi, English, Sanskrit, Prakrit, Marathi, Tamil, Kannada, Malayalam, Telugu, Bengali, Bhojpuri, Marwadi, Katchi & 18 more.
2	Bahrain	Manama, Riffa, Muharraq	Arabic, English
3	Bangladesh	Dhaka, Chittagong, Khulna	Bengali
4	Bhutan	Thimphu, Phuntsholing, Punaka, Samdrup Jonghkhar	Dzongkha
5	Brunei	Bandar Seri Begawan, Kuala Belait, Seria, Tutong	Malay
6	Burma	Yangon (Rangoon), Mandalay, Mawalamyaing	Burmese
7	Cambodia	Phnom Penh, Battambang, Siem Reap	Khmer
8	China	Beijing, Shanghai, Shenzhen, Dongguan City	Mandarin
9	East Timor	Dili	Portuguese, Tetun
10	Afghanistan	Kabul, Kandahar, Herat, Mazar-i-Sharif	Pashto, Dari

NO.	COUNTRY	CENTER OF THE MISSION	LANGUAGES
11	Indonesia	Jakarta, Medan, Pematang Siantar, Banda Aceh, Sabang, Padang, Pontianak, Denpasar, Bali, Dumai, Yogyakarta, Bandung, Pekanbaru	Indonesian, Batak, Aceh, Padang, Javanese, Chinese, English
12	Iran	Tehran, Bojnourd	Persian, English
13	Iraq	Bagdhad	Arabic, Kurdish
14	Israel	Jerusalem	Hebrew, Arabic
15	Japan	Tokyo, Kobe, Osaka	Japanese, Engish
16	Jordan	Amman	Arabic
17	Kazakhstan	Astana	Russian, Kazakh
18	Korea-N	Pyongyang, Rason, Nampo, Daesong	Korean
19	Korea-S	Seoul, Busan, Incheon, Daegu	Korean
20	Kuwait	Kuwait city, Doha	Arabic
21	Laos	Vientiane, Pakse	Lao
22	Lebanon	Beirut, Tripoli, Sidon	Arabic
23	Malaysia	Kuala Lumpur, Johor Bahur, Georgetown, Ipoh	Malay
24	Maldives	Farukolhufunadhoo, Veymandhoo, Villgili	Dhivehi
25	Mongolia	Ulaanbaatar, Erdenet, Darkhan	Mongolian
26	Nepal	Kathmandu, Pokhara, Lalitpur, Biratnagar	Nepalese, English
27	Oman	Al Jazer, Al Suwaiq, Mahooth, Mudhaybi, Mudhaiireb	Arabic
28	Pakistan	Karachi, Lahore, Bahawalpur, Peshawar	Urdu, English

NO.	COUNTRY	CENTER OF THE MISSION	LANGUAGES
29	Philippines	Manila, Pasig, Cebu City, Makati, Bonifacio, Naga City, Davao City	English, Filipino, Tagalog
30	Qatar	Doha	Arabic
31	Russia	Moscow, Saint Petersburg	Russian
32	Saudi Arabia	Riyadh, Jeddah, Mecca, Medina	Arabic
33	Singapore	Singapore	English, Malay
34	Sri Lanka	Colombo	Sinhala, Tamil
35	Syria	Damascus, Aleppo, Homs, Latakia	Arabic
36	Tajikistan	Dushanbe,Khujand	Tajik
37	Thailand	Bangkok	Thai
38	Turkey	Istanbul, Ankara, Izmir, Bursa	Turkish
39	UAE	Dubai, Abu Dhabi, Sharjah	Arabic
40	Uzbekistan	Tashkent, Samarqand, Bukhara	Uzbek
41	Vietnam	Hanoi, Ho Chi Minh City	Vietnamese
42	Yemen	Sana'a, Ta'izz, Aden, Al Hudaydah	Arabic

Centers in Africa

43	Algeria	Alger, Oran	Arabic
44	Angola	Luanda	Portuguese
45	Botswana	Gaborone	Tswana, English
46	Burundi	Bujumbura	French, Kurundi
47	C. African Republic	Bangui, Bimbo	French, Sango

NO.	COUNTRY	CENTER OF THE MISSION	LANGUAGES
48	Comoros	Moroni	French, Arabic, Comorian
49	Congo	Bukavu, Kinhasa	French
50	Egypt	Cairo, Alexandria, Giza	Arabic
51	Eritrea	Asmara, Keren	Tigrigna, Arabic, English
52	Ethiopia	Addis Ababa	Amharic
53	Gabon	Libreville	French
54	Gambia	Banjul	English
55	Ghana	Accra, Kumasi	English
56	Guinea	Conakry	French
57	Kenya	Nairobi, Mombasa, Nandi Hill	Swahili, English
58	Liberia	Monrovia	English
59	Libya	Tripoli, Benghazi	Arabic
60	Madagascar	Antananarivo	Malagasy, French
61	Malawi	Lilongwe	English
62	Mali	Bamako	French
63	Mauritania	Nouakchott	Arabic
64	Mauritius	Port Louis, Ebene	English
65	Morocco	Casablanca, Fes, Tangier, Marrakech	Arabic
66	Mozambique	Maputo	Portuguese
67	Namibia	Windhoek	English
68	Nigeria	Lagos, Kano, Abuja, Ibadan	English

NO.	COUNTRY	CENTER OF THE MISSION	LANGUAGES
69	Rwanda	Kigali	Kinyarwanda, French, English
70	S. Africa	Johannesburg, Cape Town, Durban	English, Afrikaans, Ndebele, Northern Sotho, Sotho, Swazi, Tsonga, Tswana, Venda, Xhosa, Zulu
71	Sudan	Khartoum, Omdurman, Khartoum Bahri	Arabic, English
72	Swaziland	Mbabane, Manzini	English, Swati
73	Tanzania	Dar-es-Salaam, Arusha, Kaohsiuing, New Taipei, Taichung, Taoyuan,	Swahili, English
74	Togo	Lome, Sokode, Kara	French
75	Tunisia	Tunis, Stax, Sousse	Arabic
76	Uganda	Kampala, Kira	English, Swahili
77	Zambia	Lusaka, Ndola, Kitwe	English
78	Zimbabwe	Harare, Bulawayo, Chitungwiza	Shona, Ndebele, English

Centers in Europe

79	Austria	Vienna, Graz, Linz, Salzburg, Innsbruck	German
80	Belgium	Brussels, Antwerp, Ghent, Charleroi	Dutch, German, French
81	Cyprus	Nicosia, Famagusta, Kyrenia, Limassol	Greek, Turkish
82	Denmark	Copenhagen, Aarhus, Odense, Aalborg	Danish

NO.	COUNTRY	CENTER OF THE MISSION	LANGUAGES
83	England	London, Edinburgh, Cardiff, Belfast, Oxford, Cambridge	English
84	Estonia	Tallinn, Tartu, Narva	Estonian
85	Finland	Helsinki, Espoo, Oulu, Turku, Vantaa	Swedish, Finnish
86	France	Paris, Marseille, Lyon, Toulouse	French
87	Georgia	Tbilisi, Kutaisi, Batumi	Georgian
88	Germany	Berlin, Hannover, Dresden, Leipzig, Thüringen, Stuttgart,	German
89	Greece	Athens, Thessaloniki, Patras, Heraklion	Greek
90	Hungary	Budapest, Debrecen, Miskolc, Szeged	Hungarian
91	Iceland	Reykjavik, Kopavogur	Icelandic
92	Ireland	Dublin, Cork, Limerick, Waterford	Irish, English
93	Italy	Milan, Naples, Rome, Turin, Venice-Padua	Italian
94	Lithuania	Vilnius, Kaunas	Lithuanian
95	Luxembourg	Luxembourg city	German, Luxembourgish, English
97	Morocco	Casablanca, Fes, Tangier, Marrakech, Sale	French
98	Netherlands	Amsterdam, Rotterdam	Dutch
99	Norway	Oslo, Bergen, Stavanger, Trondheim	Norwegian, Bokmal, Nyorsk
100	Poland	Warszawa, Krakow, Lodz, Wroclaw	Polish
101	Portugal	Lisbon, Porto, Fun chai, Amadora	Portuguese

NO.	COUNTRY	CENTER OF THE MISSION	LANGUAGES
102	Romania	Bucharest, Cluj-Napoca, Timisoara	Romanian
103	San Marino	Serravalle	Italian
104	Scotland	Glasgow, Edinburgh, Aberdeen, Dundee	English
105	Slovenia	Ljubljana, Maribor	Slovenian
106	Spain	Madrid, Barcelona, Valencia, Zaragoza, Malaga	Spanish
107	Sweden	Stockholm, Malmo, Gothenburg	Swedish
108	Ukraine	Kiev. Kharkiv, Dnipropetrovsk	Ukrainian

Centers in North America

109	Antigua & Barbuda	St. John's, English Harbour	English
110	Bahamas	Nassau, Freeport	English
111	Barbados	Bridgetown	English
112	Canada	Ottawa, Edmonton, Victoria, Winnipeg, Fredericton, St. John's, Halifax, Toronto, Charlottetown, Quebec city, Regina, Yellowknife, Iqaluit, Whitehorse	English, French
113	Costa Rica	San Jose, Limon	Spanish
114	Haiti	Port-Au-Prince	Haiti Creole French, French
115	Jamaica	Kingston, Montego Bay	English
116	Cuba	Havana, Santiago de Cuba, Camaguey, Holguin	Spanish

NO.	COUNTRY	CENTER OF THE MISSION	LANGUAGES
117	Dominica	Roseau, Portsmouth, Marigot, Rosalie	English
118	Panama	Panama City, San Miguelito	Spanish
119	Mexico	Mexico City, Ecatapec, Guadalajara	Spanish
120	United States	Washington DC, New York, San Francisco, Boston, Chicago, Philadelphia, Miami	English
121	Saint Lucia	Desruisseaux	English
122	Trinidad & Tobago	Laventille, Chaguanas, Mon Repos, San Fernando	English

Centers in South America

123	Argentina	Buenos Aires, Cordoba, Rosario, Mendoza	Spanish
124	Bolivia	Santa Cruz do la Sierra, El Alto, Le Paz, Oruro	Spanish, Aymara, Quechua
125	Brazil	Sao Paulo, Rio de Janeiro, Salvador, Brasilia, Fortaleza	Portuguese
125	Chile	Santiago, Valparaiso, La Serena	Spanish
127	Colombo	Bogota, Medellin, Cali, Barranquilla	Spanish
128	Guyana	Georgetown	English
129	Paraguay	Asuncion, Ciudad del Este, San Lorenzo, Luque	Spanish, Paraguayan, Guarani
130	Peru	Lima, Arequipa, Trujillo, Chiclayo	Spanish, Aymara, Quechua
131	Uruguay	Montevideo, Salto	Spanish

NO.	COUNTRY	CENTER OF THE MISSION	LANGUAGES
132	Venezuela	Caracas, Maracabom Maracay, Valencia, Barcelona	Spanish

Centers in Oceania

133	Australia	Canberra, Sydney, Melbourne, Brisbane	English
134	Fiji	Suva, Lautoka, Flagstaff	English, Fijian, Fiji Hindi
135	Marshall Islands	Majuro, Ebaye, Arno, Jabor	Marshallese, English
136	Micronesia	Weno Town, Tofol, Colonia, Kolonia	English
137	Nauru	Yaren	English, Nauruan
138	New Zealand	Auckland, Wellington, Christchurch	English, Maori
139	Papua New Guinea	Port Moresby	Tok Pisin, English, Hiri Motu
140	Samoa	Apia	Samoan, English
141	Solomon Islands	Honiara	English
142	Tonga	Nuku'alofa, Tongatapu	Tongan, English

NOTES

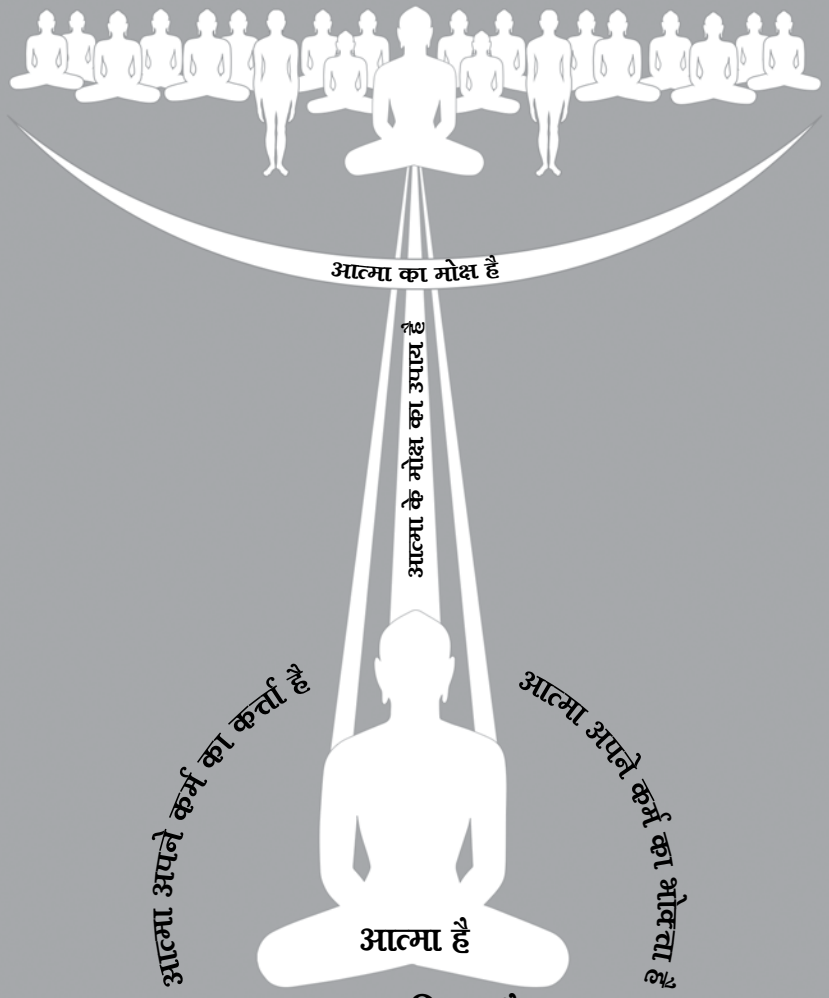

जो जीव चैतन्य स्वरूपी निज आत्मा को नित्य शुद्ध, कर्म के कर्तृत्व एवं भोक्तृत्व से भिन्न, मोक्ष स्वरूप मानते हैं, वे मोक्षमार्गी है।

श्री आत्मसिद्धि शास्त्र मिशन

श्री आत्मसिद्धि शास्त्र परमागम को पंचमकाल के अंत तक 18500 वर्षों तक सुरक्षित रखने के लिये दुनिया के 142 देशों की 415 भाषाओं में अनुवाद

''मैं केवल हृदयत्यागी हूँ। अल्प काल में कुछ अद्‌भूत करने के लिये तत्पर हूँ। संसार से ऊब चुका हूँ। मैं दुसरा महावीर हूँ, ऐसा मुझे आत्मिक शक्ति द्वारा जानने में आया है।

दुनिया मतभेद के बंधन से तत्त्व नहीं पा सकी है। महावीर ने उनके समय में मेरा धर्म कुछ अंशो में चलाया था, अब ऐसे पुरुषो के मार्ग को ग्रहण करके श्रेष्ठ धर्म स्थापन करुंगा। पूरी सृष्टि में पर्यटन करके भी उस धर्म को फैलायेंगे।''

परम कृपालु देव श्रीमद् राजचन्द्र की मंगल भावना
श्रीमद् राजचन्द्र वचनामृत पत्रांक 27 से उद्धरित

मैं कौन हूँ?
मैं कहाँ से आया हूँ?
मेरा वास्तविक स्वरूप क्या है?
किसके कारण इस संसार में बंधन है?
क्या हमें बंधन में ही रहना है या मुक्त होना है?
MULTY GRAPHICS
(022) 23873222 23884222